नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 04, अंक 210, नई दिल्ली, बुधवार 04 नवम्बर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जीवन में बड़ा बनने के लिए ऊँचा पद नहीं, बल्कि ऊँची सोच और अच्छे कर्म जरूरी हैं। क्योंकि पद से पहचान मिलती है, लेकिन कर्मों से सम्मान मिलता है।

● 02 त्योहारों के मौसम में रखें सेहत का ख्याल----शहनाज़ हुसैन
● 06 एक शिक्षित बेटी, कई पीढ़ियों का भविष्य और विकसित समाज की नींव
● 08 झारखंड के थाने में दुष्कर्म मामले में अब 15 पुलिस निलंबित, दो हुए गिरफ्तार

'टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत' कार्यालय में काम करने वाले 'कर्मचारी की आवश्यकता'

हमें अपने कार्यालय के कार्यों को संभालने के लिए एक योग्य, मेहनती एवं जिम्मेदार कर्मचारी की आवश्यकता है।

कार्य की जिम्मेदारियाँ:

1. पत्र, चिट्ठी एवं अन्य दस्तावेज़ तैयार करना और उनकी जाँच करना।
2. ईमेल चेक करना तथा उनका उचित जवाब देना।
3. व्हाट्सऐप मैसेज एवं ऑनलाइन कम्युनिकेशन संभालना।
4. कार्यालय के कार्यों का समन्वय करना।
5. सोशल मीडिया पर पोस्ट तैयार करना एवं अपलोड करना।
6. हिंदी एवं अंग्रेज़ी में मैसेज, पत्र और ईमेल तैयार करना।
7. कार्यालय के दैनिक कार्यों एवं रिकॉर्ड को व्यवस्थित रखना।

आवश्यक योग्यता:

1. कंप्यूटर एवं इंटरनेट का सामान्य ज्ञान।
2. हिंदी और अंग्रेज़ी में पढ़ने एवं लिखने की अच्छी क्षमता।
3. ईमेल, MS Word और सोशल मीडिया की जानकारी।
4. मेहनती, जिम्मेदार एवं समय का पाबंद होना चाहिए।

वेतन: ₹15,000 से ₹20,000 प्रति माह

कार्यालय का पता: सेवक पार्क - द्वारका मोड़ - नई दिल्ली।

संपर्क नंबर:
+91 70535 33169
Email Address
tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com
parivahanvishesh@gmail.com
newstransportvishesh@gmail.com

इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा (Resume) भेजें या दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

धन्यवाद!

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND WELFARE ALLIED TRUST REGISTERED
(Registered)
KARMACHARI KI AVASHYAKTA
OFFICE STAFF REQUIRED

NOW HIRING - IMMEDIATE REQUIREMENT

जिम्मेदारियाँ / RESPONSIBILITIES:
- 1. पत्र-चिट्ठी, दस्तावेज़ तैयार एवं जाँच
- ईमेल चेक एवं जवाब
- व्हाट्सऐप ऑनलाइन कम्युनिकेशन
- कार्यालय समन्वय
- सोशल मीडिया पोस्ट तैयार एवं अपलोड
- हिंदी-अंग्रेज़ी संदेश, पत्र, ईमेल
- दैनिक रिकॉर्ड व्यवस्थित

योग्यता / ELIGIBILITY:
- कंप्यूटर एवं इंटरनेट ज्ञान
- हिंदी-अंग्रेज़ी पढ़ने-लिखने की क्षमता
- ईमेल, MS Word, सोशल मीडिया का ज्ञान
- मेहनती, जिम्मेदार एवं समय पाबंद

वेतन / SALARY:
₹15,000 – ₹20,000 प्रति माह

पता / ADDRESS:
सेवक पार्क, द्वारका मोड़, नई दिल्ली

संपर्क करें / CONTACT:
फ़ोन / Call/WhatsApp: +91 70535 33169 (7053533169)
ईमेल / Emails: tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com
parivahanvishesh@gmail.com
newstransportvishesh@gmail.com

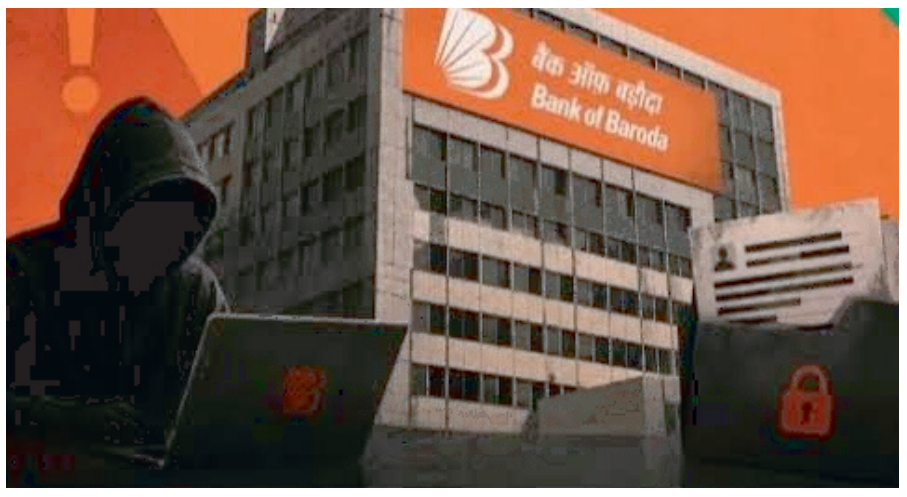
परिवहन विशेष - Parivahan Vishesh | प्रधान संपादक संजय कुमार बाठला | Editor in Chief Sanjay Kumar Bathla | सह संपादक पिंकी कुंडू | Co Editor Pinki Kundu | नवंबर 2026 | November 2026
इच्छुक उम्मीदवार उपरोक्त नंबर पर संपर्क करें या ईमेल पर अपना रिज्यूम भेजें

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html |
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

बैंक ऑफ बड़ौदा की ईमेल सेंध ने बढ़ाई साइबर सुरक्षा की चिंता, AI आधारित हमलों से निपटने के लिए तकनीकी निवेश बढ़ाना जरूरी



पिंकी कुंडू



बैंक ऑफ बड़ौदा में ईमेल खाते से हुई साइबर सेंध यह दर्शाती है कि संगठनों, विशेष रूप से बैंकों, को AI-आधारित सोशल इंजीनियरिंग हमलों के व्यापक होने से पहले प्रौद्योगिकी और साइबर सुरक्षा पर निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि करनी होगी। रिपोर्टों के अनुसार, यह घटना एक कर्मचारी के ईमेल खाते के समझौता (Compromise) हो जाने से शुरू हुई, जिसके बाद बैंक ने साइबर सुरक्षा, उपयोगकर्ता अभिगम नियंत्रण (Access Control), कर्मचारी जागरूकता कार्यक्रमों तथा तकनीकी निवेश को अपनी पारंपरिक व्यय सीमा से आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

AI युग में अधिक तकनीकी निवेश क्यों आवश्यक है?

1. AI फ़िशिंग ईमेल की पहचान लगभग असंभव बना रहा है

पारंपरिक फ़िशिंग ईमेल में अक्सर वर्तनी संबंधी गलतियाँ या संदिग्ध भाषा होती थी। अब AI ऐसे ईमेल तैयार कर सकता है:

पूरी तरह त्रुटिरहित और पेशेवर ईमेल

सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी के आधार पर व्यक्तिगत संदेश

वरिष्ठ अधिकारियों, नियामक संस्थाओं या ग्राहकों के नाम से भेजे गए प्रतीत होने वाले ईमेल

परिणामस्वरूप, तकनीकी सुरक्षा उपायों के बावजूद मानव कर्मचारी सबसे कमजोर कड़ी बन जाते हैं। बैंक ऑफ बड़ौदा की घटना ने दिखाया कि एक समझौता किया गया ईमेल खाता हमलावरों के लिए पूरे संगठन में प्रवेश का द्वार बन सकता है।

2. डीपफेक आवाज़ और वीडियो आधारित धोखाधड़ी

साइबर अपराधी तेजी से उपयोग कर रहे हैं:

AI-जनित वॉइस क्लोनिंग डीपफेक वीडियो कॉल

कृत्रिम (Synthetic) डिजिटल पहचान

ऐसी स्थिति में किसी कर्मचारी को CEO, नियामक अधिकारी या सरकारी अधिकारी के नाम से कॉल प्राप्त हो सकती है, जिसमें तत्काल धन हस्तांतरण या संवेदनशील जानकारी साझा करने के निर्देश दिए जाएँ।

3. बिजनेस ईमेल कम्प्रोमाइज (BEC) के खतरे लगातार विकसित हो रहे हैं

AI निम्नलिखित का विश्लेषण कर सकता है:

संगठनात्मक पदानुक्रम (Hierarchy)

ईमेल लेखन शैली

आंतरिक संचार के पैटर्न

इससे अपराधी ऐसे अत्यंत विश्वसनीय संदेश तैयार कर सकते हैं जो कर्मचारियों के संदेह से बच निकलें। भले ही बैंकिंग प्रणालियाँ सुरक्षित हों, एक समझौता किया गया ईमेल खाता संवेदनशील सूचनाओं के खुलासे और आगे होने वाली धोखाधड़ी का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

4. पहचान एवं अभिगम प्रबंधन (Identity & Access Management) को उन्नत करना अनिवार्य

बैंक ने उपयोगकर्ता अभिगम नियंत्रण को मजबूत करने के लिए बहु-स्तरीय सत्यापन (Multi-layer Verification) लागू करने की आवश्यकता पर बल दिया। आज के समय में केवल पासवर्ड पर्याप्त नहीं हैं।

आवश्यक उपाय:

मल्टी-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (MFA)

जोखिम-आधारित प्रमाणीकरण (Risk-Based Authentication)

प्रिविलेज्ड एक्सेस मैनेजमेंट (PAM)

जीरो ट्रस्ट आर्किटेक्चर (Zero Trust Architecture)

निरंतर सत्र निगरानी (Continuous Session Monitoring)

5. AI बनाम AI: साइबर युद्ध का नया मैदान

संगठनों को अब सुरक्षा हेतु AI आधारित प्रणालियों की आवश्यकता है, जो:

असामान्य उपयोगकर्ता गतिविधियों की पहचान करें

डीपफेक सामग्री का पता लगाएँ

आंतरिक खतरों (Insider Threats) की निगरानी करें

AI-निर्मित फ़िशिंग अभियानों की पहचान करें

स्वचालित थ्रेट हंटिंग संचालित करें

AI-संचालित सुरक्षा उपायों के बिना मानव विश्लेषक AI-संचालित हमलावरों की गति का मुकाबला नहीं कर पाएंगे।

"AI के युग में साइबर सुरक्षा पर होने वाला खर्च मात्र IT व्यय नहीं, बल्कि संस्थान के अस्तित्व की सुरक्षा में किया गया निवेश है। आज एक समझौता किया गया ईमेल खाता कल AI-संचालित धोखाधड़ी, डीपफेक प्रतिरूपण, बड़े पैमाने पर डेटा चोरी और संस्थागत प्रतिष्ठा को गंभीर क्षति पहुँचाने का माध्यम बन सकता है।"

बैंक ऑफ बड़ौदा की ईमेल सुरक्षा घटना सभी संगठनों के लिए एक चेतावनी है। जैसे-जैसे AI अत्यंत विश्वसनीय फ़िशिंग ईमेल, डीपफेक आवाज़ें और व्यक्तिगत सोशल इंजीनियरिंग हमले संभव बना रहा है, वैसे-वैसे साइबर सुरक्षा निवेश को केवल पारंपरिक सुरक्षा उपायों तक सीमित न रखकर AI-संचालित रक्षा प्रणाली, जीरो ट्रस्ट अभिगम नियंत्रण, कर्मचारी जागरूकता और निरंतर खतरा निगरानी की ओर केंद्रित करना होगा। रोकथाम पर किया गया खर्च, AI-सक्षम साइबर हमले से होने वाले नुकसान की तुलना में कहीं कम है।

परिवहन विशेष समाचार पत्र से जुड़े सभी पाठकों और सहयोगियों के लिए विशेष सूचना

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं की हम अपने चैनल के माध्यम से आपको 1. प्रतिदिन की देश विदेश की जानकारी 2. आपके वह आपके बच्चों के कैरियर, 3. आपके बच्चों के भविष्य से संबंधित ज्ञानवर्धक आवश्यक जानकारिया, 4. आपकी सेहत से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारियां 5. शारीरिक बीमारियों से बचने के तरीके 6. धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान विश्व के सभी क्षेत्रों के ज्ञानदाताओं के माध्यम से प्रदान करने का प्रयास करेंगे। हम अपने चैनल द्वारा प्रतिदिन एक घंटे के कार्यक्रम "जनता की पुकार" में आपकी आवाज को विश्व के सामने प्रस्तुत कर सरकार और सरकारी विभागों के साथ माननीय न्यायालयों से उसके उचित हल और उसके प्रति पालिसी लागू करवाने में मध्यांतर का माध्यम बनेंगे। आप सभी से अनुरोध आप के अपने शुरू होने वाले चैनल के माध्यम से अपनी शिकायतें, परेशानियां और अनुभव अन्य सभी से साझा करने के लिए तैयार एवं तत्पर रहे। आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

ISRO का EOS-05 - भारत की अंतरिक्ष में स्थायी तीसरी आँख



36,000 KM से भारत पर पैनी नजर, ISRO ने रचा इतिहास – EOS-05 बना देश का पहला जियो-इमेजिंग सैटेलाइट GSLV-F17 से सफल प्रक्षेपण, बाढ़-तूफान से लेकर सीमा सुरक्षा तक हर 5 मिनट में देगा अलर्ट

प्रस्तुतकर्ता: पिंकी कुंडू | सामाजिक परामर्शदाता

प्रस्तावना: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने 4 सितंबर 2026 को वो कर दिखाया जो आज तक नहीं हुआ था। 51.7 मीटर ऊंचे GSLV-F17 रॉकेट ने श्रीहरिकोटा से उड़ान भरकर 2,367 KG वजनी EOS-05 उपग्रह को जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में स्थापित किया। यह GSLV का अब तक का सबसे भारी पेलोड और इसरो की 7 महीने के अंतराल के बाद पहली कक्षीय सफलता है।

तथ्य और तकनीकी विवरण:

1. लॉन्च विवरण: दिनांक 04.09.2026, समय 02:55 AM, स्थान सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा। यह GSLV की 19वीं उड़ान और केंद्र का 107वां प्रक्षेपण था।

2. कक्षा: अंतिम कक्षा ~34,903 x 35,884 KM, यानी लगभग 36,000 KM। धरती की घूर्णन गति से तालमेल होने के कारण यह उपग्रह भारत के ऊपर स्थायी रूप से स्थिर प्रतीत होगा।

3. पेलोड: 256-चैनल हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजर, जो हर कुछ मिनट में स्पेक्ट्रल डेटा रिफ्रेश करने में सक्षम है।

सामान्य उपग्रहों से कैसे अलग?

अब तक के अधिकांश अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट LEO (400-800 KM) में घूमते हैं। वे एक स्थान के ऊपर केवल कुछ मिनट रहते हैं और घंटों बाद लौटते हैं। EOS-05 जियोस्टेशनरी ऑर्बिट में होने से भारत पर लगातार CCTV की तरह नजर रखेगा।

मुख्य बिंदु – देश को क्या लाभ होगा?

- आपदा प्रबंधन में क्रांति: बाढ़, चक्रवात, जंगल की आग और बादल फटने जैसी घटनाओं की इमेजिंग हर 5 मिनट में और पूरे भारत का स्कैन लगभग हर 30 मिनट में।

- कृषि और पर्यावरण: फसल तनाव, मिट्टी की नमी, खनिज धूल और वन आवरण का रीयल-टाइम आकलन।

- सामरिक महत्व: सीमा क्षेत्रों, सामरिक प्रतिष्ठानों और समुद्री गतिविधियों पर निरंतर निगरानी।

- भरोसे की वापसी: यह मिशन मई 2025 (PSLV-C61) और जनवरी 2026 (PSLV-C62) की लगातार विफलताओं और 2021 में GISAT-1/EOS-03 की विफलता के बाद ISRO के लिए प्रतिष्ठा बहाली मिशन है।

निष्कर्ष: EOS-05 केवल एक उपग्रह नहीं, बल्कि भारत की आत्मनिर्भर अंतरिक्ष निगरानी क्षमता की दिशा में बड़ा कदम है। जब INSAT-3DS जैसे मौसम उपग्रह पहले से 35,786 KM पर काम कर रहे हैं, तब EOS-05 इमेजिंग के मामले में एक नया मानक स्थापित करेगा।

त्योहारों के मौसम में रखें सेहत का ख्याल: शहनाज़ हुसैन



त्योहारों का सीजन शुरू हो चुका है/ त्यौहारों का मौसम जश्न मनाने और दावतों का समय होता है/ इन दिनों में जायके के शौकीन लोग कई तरह के लज़ीज़ पकवान और मिठाईयां जमकर खाते हैं, जिसका असर सीधा सेहत पर पड़ता है /

फेस्टिव सीजन आते ही हर घर में मिठाइयों, तले.भुने पकवानों और भारी भोजन का सिलसिला शुरू हो जाता है/ इस फेस्टिव ट्रीट में जिन मिठाईयों और खाने के आइटम्स परोसे जाते हैं उनमें चीनी और फैट अधिक मात्रा में होती है। जिससे हमें भूख अधिक लगती है और अधिक खाने से पाचन तन्त्र गड़बड़ा जाता है जिसके सीधा असर हमारी सेहत पर पड़ता है /

त्योहारों के दौरान घर की साफ़ सफाई , मेहमानों की आवभगत की तैयारियों और भाग दौड़ की बजह से अक्सर हम समय पर भोजन नहीं ले पाते हैं / इसके अलावा अधिक तेल.मसाले वाला भोजन और मिठाइयों का ज्यादा सेवन गैस, एसिडिटी, अपच और कब्ज जैसी परेशानियों का कारण बनता है।

मेरा मानना है कि त्योहारों में जमकर खाने का लुफ्त उठाने के साथ साथ ही पेट और सेहत का ध्यान रखने के लिए थोड़ी सावधानी और समझदारी बेहद जरूरी है/ त्योहारों में स्वाद और खुशियों के साथ.साथ सेहत को भी प्राथमिकता देना जरूरी है

1 -----खानपान ------

त्योहारों के दिनों में लोगों को सेहत का सन्तुलन बनाये रखने के लिए माइंडफुल ईटिंग पर ध्यान देना चाहिए। बीमारियों को दूर करने के लिए खानपान और आदतों में बदलाव करना जरूरी है।

त्योहारों में तरह.तरह के व्यंजन और मिठाइयां देखकर अक्सर हम जरूरत से ज्यादा खा लेते हैं/ जिससे गैस, एसिडिटी और अपच जैसी समस्याएं हो जाती हैं/

त्योहारों में नमकीन, बिस्किट, , समोसे कचौड़ी जैसे व्यंजनों को बनाने के लिए सबसे ज्यादा मैदे का उपयोग किया जाता है/

जिसमें ट्रांस फैट अत्यधिक होता है, जिसकी वजह से कोलेस्ट्रॉल बढ़ जाता है /

लड्डू, गुलाब जामुन, गुजिया और नमकीन पकोड़े जैसे स्वादिष्ट पकवानों में चीनी, तेल और कैलोरी की मात्रा अधिक होती/

रोजाना ज्यादा मीठा या तली.भुनी चीजें खाने से वजन बढ़ने के साथ.साथ ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल लेवल भी प्रभावित हो सकता है/

मिठाइयों में उपयोग किया जाने वाले तेल और मावे की बजह से हेल्थ पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ज्यादा शुगर खाने से धामनिया संकुचित होने लगती हैं और हार्ट अटैक का जोखिम बढ़ता है। इसलिए फेस्टिव सीजन में सीमित मात्रा में ही मिठाइयों का सेवन करें।

मेरा सुझाव है की आप मिठाइयों की जगह ड्राई फ्रूट्स, खजूर या गुड़ से बनी चीजों को प्राथमिकता दें/ खास तौर पर बाजार में तैयार खाद्य पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए /

बाजार से मिठाई खरीदने की जगह नारियल की बर्फी आदि मिठाइयों को आप आसानी से घर पर ही बना सकते हैं/

अपनी डाइट में फाइबर से भरपूर चीजों को शामिल करें। फल, सलाद और साबुत अनाज जैसे विकल्प पाचन तंत्र को सही रखने में मदद करते हैं। फाइबर युक्त भोजन आपके पाचन तंत्र में पानी को बनाए रखता है जिससे भोजन को आसानी से पचाने में मदद मिलती है।

मेरी सलाह है कि प्लेट में उतना ही लें जितना भूख हो, और छोटे.छोटे हिस्सों में बार.बार खाएं/

त्योहारों में खाने की विविधता भले ही आकर्षक हो लेकिन ओवरईटिंग से बचना सबसे जरूरी /

2 ----मिठाईयों को सीमित मात्रा में लें -

त्योहारों में मिठाइयों का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए क्योंकि उनमें चीनी, कैलोरी और फैट अधिक होता हैए जिससे वजन बढ़ना, डायबिटीज, और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा होता है/

मिठाई, नमकीन, मसालेदार और तले हुए खाद्य पदार्थों से पूरी तरह परहेज करना तो मुश्किल हैए लेकिन इनकी मात्रा को सीमित करने से डाइट को मैनेज करने में मदद मिलती हे।

ध्यान रखे कि आप कितना खा रहे हैं।

गुड़, शहद या फलों का प्राकृतिक मीठापन चुनें/

त्योहारों में मिठाइयों के



साथ.साथ कई नमकीन पकवान भी बनाए जाते हैं जिसको देखकर हम अपने मन पर नियन्त्रण नहीं कर पाते और काफी मात्रा में इसका सेवन कर लेते हैं जिससे हाई ब्लड प्रेशर की समस्याए, हार्ट अटैक, स्ट्रोक और दिल से जुड़े कई बीमारियों के होने का जोखिम रहता है।

3 -------व्यायाम

त्योहारों में नियमित रूप से व्यायाम करें/ नियमित रूप से व्यायाम करने से वजन नियंत्रण में रहता है, मूड बेहतर होता है मानसिक तनाव कम होता है /

आप रोजाना कुछ मिनट टहलकरए घर पर हल्की.फुल्की स्ट्रेचिंग करके या सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेकर सक्रिय रह सकते हैं/ इस तरह आप त्योहारी मौसम के दौरान भी स्वस्थ और ऊर्जावान महसूस करें/

व्यायाम हमारे शरीर और मन को प्रकृति की बदलती लय के अनुकूल बनाने में मदद करता है। यदि आप दशहरा और दिवाली के त्योहारों के दौरान योग का अभ्यास जारी रखते हैं तो आपको अधिक आत्मविश्वास और शालीनता से घूमने.फिरने के लिए ऊर्जा में वृद्धि महसूस होगी।

अपनी दिनचर्या में नियमित वृक्षासन, ताड़ासन और भुजंगासन को शामिल करें। ये योग वजन कंट्रोल करने में मदद करेंगे।

4 ---हाइड्रेटेड रहें---

दिन की शुरुआत पानी से करें/ त्योहारों के सीजन में लोगों की दौड़.धूप बहुत ज्यादा हो जाती है/ ऐसे में शरीर को हाइड्रेट रखना बहुत जरूरी है

अपने दिन की शुरुआत एक बड़े गिलास निम्बू पानी से करें। इससे मेटाबॉलिज़्म तेज़ होगा, कोशिकाएं हाइड्रेट होंगी और विषाक्त पदार्थ बाहर निकलेंगे जिससे शरीर को ऊर्जा मिलेगी।

पानी पाचन तंत्र को साफ रखता है और एसिडिटी व कब्ज जैसी समस्याओं से बचाता है।

पानी की कमी से आप दिन भर की भाग दौड़ नहीं कर सकेंगे क्योंकि इससे रक्त चाप बढ़ सकता है और आपका शरीर थका थका महसूस करेगा / अपने आहार में तरबूज़, खीरा, संतरा और स्ट्रॉबेरी जैसे खाद्य पदार्थ शामिल करें। ये खाद्य पदार्थ न सिर्फ़ हाइड्रेटेड रखते हैं बल्कि ज़रूरी विटामिन और खनिज भी प्रदान करते हैं।

फल और सब्जियां आपको कम कैलोरी देती हैं/ इन्हें स्नैक्स में शामिल कर आप कम वसा का सेवन करने में सफल हो सकते हैं/

दावतों के दौरान भारी और तैलीय व्यंजनों के साथ सलाद या फलों की थाली का संतुलन बनाएँ। ये खाद्य पदार्थ न केवल हाइड्रेट करते हैंए बल्कि आवश्यक विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट भी प्रदान करते हैं।

अपने साथ पानी की 1 बोतल रखें और हर आधे घंटे में पानी पीते रहें/

लेखिका अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौन्दर्य विशेषज्ञ है और हर्बल क्वीन के रूप में लोकप्रिय है।

असली दवाइयां - बिना केमिकल के 15 प्राकृतिक उपचार





मेडिकल स्टोर की नहीं, जीवनशैली की है जरूरत – ये 15 असली दवाइयां बदल देंगी आपकी सेहत
व्यायाम से लेकर सेवा भाव तक, शरीर और मन को स्वस्थ रखने का प्राकृतिक फॉर्मूला, जिसकी कोई एक्सपायरी डेट नहीं

परिवहन विशेष - विशेष स्वास्थ्य लेख

प्रस्तावना: आज के दौर में हम छोटी-छोटी तकलीफ के लिए तुरंत दवा की गोली ढूंढते हैं। लेकिन हमारे बुजुर्ग जानते थे कि सबसे असरदार दवाइयां मेडिकल स्टोर में नहीं, हमारी रोजमर्रा की आदतों में छुपी हैं। हालिया स्वास्थ्य जागरूकता अभियान में सामने आए 15 प्राकृतिक उपचार इसी सत्य को दोहराते हैं। ये न सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मन को भी शांत और सकारात्मक बनाते हैं।

तथ्य और वैज्ञानिक आधार:

1. व्यायाम (Exercise): रोज 30 मिनट की तेज चाल, योग या कोई भी शारीरिक गतिविधि। WHO के अनुसार नियमित व्यायाम से हृदय रोग का खतरा 35% तक कम होता है।

2. पर्याप्त नींद: 7-8 घंटे की गहरी नींद शरीर का सबसे बड़ा रिपेयर सिस्टम है।

3. पानी: शरीर का 70% हिस्सा पानी है। सही मात्रा में पानी पीने से किडनी, पाचन और त्वचा स्वस्थ रहती है।

4. धूप: सुबह की 15-20 मिनट की धूप Vitamin-D का सबसे बड़ा प्राकृतिक स्रोत।

5. संतुलित आहार: मौसमी फल, सब्जियां, मोटा अनाज - यही असली सप्लीमेंट है।

6. हँसी: एक खुलकर हँसी Cortisol (तनाव हार्मोन) को 40% तक कम कर सकती है।

7. ध्यान / मेडिटेशन: रोज 10 मिनट ध्यान से ब्लड प्रेशर और चिंता नियंत्रित होती है।

8. प्रेम और अच्छे संबंध: परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना Oxytocin बढ़ाता है, जो दिल के लिए दवा है।

9. कृतज्ञता (Gratitude): रोज 3 अच्छी बातों के लिए धन्यवाद कहना डिप्रेशन के लक्षणों को कम करता है।

10. सेवा भाव: दूसरों की मदद करना न सिर्फ सामाजिक, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी सबसे बड़ी दवा है।

11. सांसों का अभ्यास (Breathing): गहरी सांसें फेफड़ों की क्षमता और मन की शांति दोनों बढ़ाती हैं।

12. उपवास / संयम: सप्ताह में एक बार हल्का आहार पाचन तंत्र को आराम देता है।

13. प्रकृति से जुड़ाव: पार्क में चलना, पेड़-पौधों के बीच समय बिताना Vitamin-N (Nature) देता है।

14. सकारात्मक सोच: नकारात्मक विचार इम्युनिटी घटाते हैं, सकारात्मकता बढ़ाती है।

15. माफी देना: मन में गांठ रखना शरीर में जहर रखने जैसा है, माफ करना सबसे बड़ी हीलिंग है।

सामान्य दवाओं से कैसे अलग?

केमिकल दवाएं एक लक्षण को दबाती हैं, अक्सर साइड इफेक्ट के साथ। ये 15 प्राकृतिक दवाएं जड़ पर काम करती हैं - बिना किसी खर्च, बिना किसी साइड इफेक्ट और बिना एक्सपायरी के।

मुख्य बिंदु - देश को क्या लाभ?

- खर्च में कमी: स्वास्थ्य पर होने वाला अनावश्यक खर्च बचेगा।

- बीमारी से बचाव: Prevention is better than cure - 80% जीवनशैली रोग इन्हीं से रोके जा सकते हैं।

- मानसिक स्वास्थ्य: तनाव, अकेलापन और अवसाद जैसी आधुनिक महामारियों का हल।

- परिवार और समाज: जब व्यक्ति स्वस्थ, तो परिवार स्वस्थ, तो समाज स्वस्थ।

निष्कर्ष: दवा की दुकान पर जाने से पहले अपनी दिनचर्या की दुकान पर जाइए। ये 15 असली दवाइयां अपनाइए - चीनी कम करें, सेहत, ऊर्जा और बेहतर लाइफस्टाइल पाएं।

हीमोग्लोबिन और अल्जाइमर रोग: क्या खून की कमी मस्तिष्क की सेहत के लिए खतरे का संकेत है?

युवाओं में एनीमिया का 56% प्रसार, वृद्धावस्था में डिमेंशिया का बढ़ा जोखिम – वैज्ञानिक शोध ने खोला नया संबंध

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - स्वास्थ्य विशेषांक

प्रस्तावना: खून की कमी को अक्सर सिर्फ शारीरिक थकान से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन नए वैज्ञानिक शोध ने एक गंभीर चेतावनी दी है। रक्त में हीमोग्लोबिन का कम स्तर न केवल शरीर, बल्कि मस्तिष्क की कार्यक्षमता और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य (Cognitive Health) के लिए भी खतरे का संकेत हो सकता है। एनीमिया युवाओं में मानसिक-शारीरिक बीमारियों और वृद्धावस्था में डिमेंशिया तथा अल्जाइमर रोग के बढ़ते जोखिम से जुड़ा पाया गया है।

तथ्य - व्यवस्थित समीक्षा अगस्त 2026: अगस्त 2026 में प्रकाशित एक व्यवस्थित वैज्ञानिक समीक्षा (Systematic Review and Meta-analysis) में भारत के 10-19 वर्ष के लगभग 1.60 लाख किशोरों से संबंधित 45 अध्ययनों का विश्लेषण किया गया।

- कुल प्रसार: लगभग 56% किशोरों में एनीमिया पाया गया

- किशोरियों में: अनुमानित प्रसार 62%

- किशोरों में: अनुमानित प्रसार 39%

- मुख्य जोखिम कारक: आयरन की कमी, पोषण में विविधता का अभाव, अपर्याप्त माइक्रोन्यूट्रिएंट सेवन

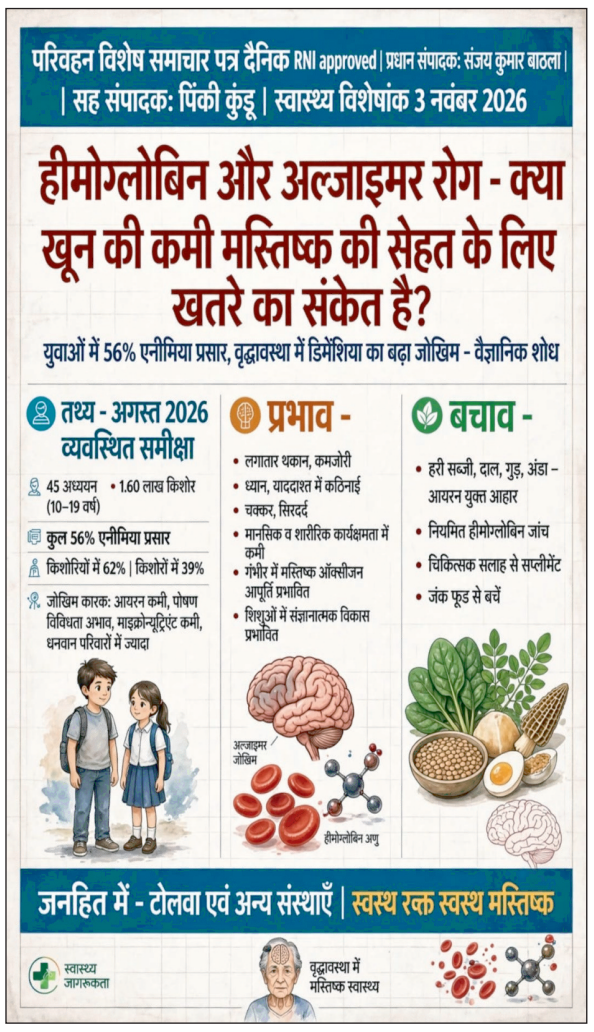
मुख्य बिंदु - चौंकाने वाला निष्कर्ष:

1. धनवान परिवारों में अधिक जोखिम: गरीब परिवार की तुलना में धनवान परिवारों के बच्चों में एनीमिया अधिक पाई गई है। इसका कारण जंक फूड, पोषण विविधता की कमी और असंतुलित आहार माना जा रहा है।

2. युवाओं पर असर: किशोरावस्था में एनीमिया कुछ मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन सकता है।

3. वृद्धावस्था पर असर: हीमोग्लोबिन का लगातार कम स्तर वृद्धावस्था में डिमेंशिया और अल्जाइमर रोग के जोखिम को बढ़ा सकता है।

विस्तृत विश्लेषण - तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क पर प्रभाव:



मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के सामान्य विकास एवं कार्यों के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन और आयरन दोनों आवश्यक हैं। हीमोग्लोबिन ही ऑक्सीजन को फेफड़ों से मस्तिष्क तक पहुंचाता है।

हीमोग्लोबिन की कमी से निम्नलिखित समस्याएँ हो सकती हैं:

- लगातार थकान और कमजोरी
- ध्यान केंद्रित करने तथा याददाश्त में कठिनाई
- चक्कर आना और सिरदर्द
- मानसिक एवं शारीरिक कार्यक्षमता में कमी
- गंभीर एनीमिया में मस्तिष्क सहित महत्वपूर्ण अंगों तक ऑक्सीजन की आपूर्ति प्रभावित होना

विशेष रूप से शिशुओं और छोटे बच्चों में आयरन की गंभीर कमी मस्तिष्क के विकास, सीखने की क्षमता और संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) को प्रभावित कर सकती है। कुछ प्रभाव लंबे समय तक बने रह सकते हैं।

निष्कर्ष - जनहित में संदेश:

रक्त में हीमोग्लोबिन का उचित स्तर बनाए रखना केवल शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ही नहीं, बल्कि मस्तिष्क की कार्यक्षमता के लिए भी अनिवार्य है।

क्या करें:

- संतुलित आहार में हरी पत्तेदार सब्जियां, दालें, गुड़, अंडा और आयरन युक्त खाद्य पदार्थ शामिल करें

- किशोरियों में नियमित हीमोग्लोबिन जांच आवश्यक है

- चिकित्सक की सलाह से आयरन और माइक्रोन्यूट्रिएंट सप्लीमेंट लें

- जंक फूड और एक ही प्रकार के भोजन से बचें, पोषण में विविधता लाएं

जनहित में - टोलवा एवं अन्य संस्थाएँ | स्वस्थ रक्त - स्वस्थ मस्तिष्क | एनीमिया मुक्त भारत लक्ष्य

नोट: यह जानकारी जन-जागरूकता हेतु है, किसी भी लक्षण पर चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें।

ग्रीन पटाखे: कम प्रदूषण, लेकिन कितना कम? क्या हरित दीवाली संभव है?



डॉ. विजय गर्ग

दीवाली रोशनी, खुशियों और आपसी मेल-जोल का त्योहार है। पीढ़ियों से लोग इस अवसर को दीप जलाकर, मिठाइयाँ बाँटकर, परिवार के साथ समय बिताकर और आतिशबाजी करके मनाते आ रहे हैं। लेकिन वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को लेकर बढ़ती चिंता ने एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा किया है: क्या हम पर्यावरण की रक्षा करते हुए भी दीवाली मना सकते हैं? ग्रीन पटाखे इसका एक संभावित विकल्प बनकर सामने आए हैं, लेकिन वे वास्तव में कितने पर्यावरण-अनुकूल हैं?

ग्रीन पटाखे क्या हैं?

ग्रीन पटाखे विशेष रूप से इस तरह तैयार किए जाते हैं कि पारंपरिक पटाखों की तुलना में पर्यावरण पर उनका कम प्रतिकूल प्रभाव पड़े। इनका उद्देश्य कम प्रदूषक पदार्थ छोड़ना और हवा में सूक्ष्म कणों की मात्रा घटाना है। कुछ प्रकार के ग्रीन पटाखों में हानिकारक रसायनों के उपयोग को कम करने का प्रयास भी किया जाता है।

पारंपरिक पटाखों से अलग, स्वीकृत ग्रीन पटाखे निर्धारित मानकों के अनुसार बनाए जाते हैं। उनकी प्रामाणिकता की जाँच के लिए उन पर पहचान चिह्न या क्यूआर कोड भी हो सकते हैं। हालांकि, यह समझना जरूरी है कि 'ग्रीन' होने का अर्थ पूरी तरह प्रदूषण-मुक्त होना नहीं है।

ये प्रदूषण कितना कम करते हैं?

ग्रीन पटाखों का उद्देश्य पारंपरिक पटाखों की तुलना में प्रदूषण कम करना है। लेकिन प्रदूषण में वास्तविक कमी पटाखे के प्रकार, उसकी संरचना, निर्माण की गुणवत्ता और उपयोग के तरीके पर निर्भर करती है।

ये सूक्ष्म प्रदूषक कणों और कुछ हानिकारक पदार्थों के उत्सर्जन को कम कर सकते हैं, लेकिन इनसे भी धुआँ, गैसें और शोर उत्पन्न होते हैं। जब कम समय में बड़ी संख्या में पटाखे जलाए जाते हैं, तो उनका सामूहिक प्रभाव स्थानीय वायु गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

इसलिए 'ग्रीन पटाखे' शब्द से यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि ये पर्यावरण के लिए पूरी तरह हानिरहित हैं।

पटाखों का स्वास्थ्य पर प्रभाव

पटाखों के धुएँ में सूक्ष्म कण और गैसें हो सकती हैं, जो आँखों, गले और श्वसन तंत्र में जलन पैदा करती हैं। बहुत छोटे कण फेफड़ों के भीतर तक पहुँच सकते हैं और अस्थमा, ब्रोंकाइटिस तथा अन्य श्वसन संबंधी बीमारियों को बढ़ा सकते हैं।

बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएँ और हृदय या फेफड़ों की बीमारियों से पीड़ित लोग इस प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। तेज धमाकों से तनाव, नींद में बाधा और सुनने की क्षमता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

ग्रीन पटाखों का उपयोग करने पर भी धुएँ और अत्यधिक शोर से बचना आवश्यक है।

क्या ग्रीन पटाखे वास्तव में पर्यावरण-अनुकूल हैं?

ग्रीन पटाखे प्रदूषण कम करने की दिशा में एक प्रयास हैं, लेकिन वे पर्यावरण की सभी समस्याओं का समाधान नहीं हैं। इनके लाभ वैज्ञानिक परीक्षण, वास्तविक निर्माण, प्रमाणन और जिम्मेदार उपयोग पर निर्भर करते हैं।

उपभोक्ताओं को केवल अधिकृत पटाखे ही खरीदने चाहिए और उनकी पहचान संबंधी जानकारी की जाँच करनी चाहिए। ग्रीन पटाखों के नाम पर बेचे जाने वाले नकली या गैर-मानक उत्पाद निर्धारित मानकों पर खरे नहीं उतर सकते।

यह भी याद रखना जरूरी है कि प्रदूषण कम करना केवल पटाखों का प्रकार बदलने से संभव नहीं है। उनकी कुल खपत घटाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

हरित दीवाली कैसे मनाएँ?

कुछ सरल और सार्थक कदम अपनाकर हम स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल दीवाली मना सकते हैं:

- पारंपरिक मिट्टी के दीयों और ऊर्जा बचाने वाली रोशनी को प्राथमिकता दें।
- पटाखों का उपयोग कम करें या पूरी तरह उनसे बचें।
- यदि पटाखे चलाने ही हों, तो केवल अधिकृत ग्रीन पटाखे खरीदें।
- अस्पतालों, स्कूलों, पशुओं और भीड़भाड़ वाले आवासीय क्षेत्रों के पास पटाखे न चलाएँ।
- छोटे बच्चों को बड़ों की निगरानी के बिना पटाखे न चलाने दें।
- पटाखों के अवशेष और पैकेजिंग का उचित तरीके से निपटान करें।
- रोशनी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आपसी मेल-जोल पर आधारित सामूहिक आयोजनों को प्रोत्साहित करें।

स्कूल, आवासीय कल्याण समितियाँ और सामाजिक संगठन भी वायु गुणवत्ता, ध्वनि प्रदूषण तथा जिम्मेदारी से त्योहार मनाने के बारे में जागरूकता फैला सकते हैं।

पटाखों से आगे: सोच में बदलाव

वास्तव में हरित दीवाली का निर्धारण पटाखे के रंग या उस पर लगे लेबल से नहीं होता। इसका असली आधार मानव स्वास्थ्य, पशु-पक्षियों और पर्यावरण के प्रति हमारी संवेदनशीलता है। त्योहार खुशियाँ लेकर आने चाहिए, न कि साँस लेने में परेशानी, शोर से तनाव और पर्यावरण को नुकसान।

ग्रीन पटाखे प्रदूषण कम करने की दिशा में एक कदम हो सकते हैं, लेकिन सबसे प्रभावी उपाय उनका उपयोग सीमित करना और दीवाली मनाने के स्वच्छ विकल्प अपनाना है।

निष्कर्ष

ग्रीन पटाखे पारंपरिक पटाखों की तुलना में कम प्रदूषण फैला सकते हैं, लेकिन कम प्रदूषण का अर्थ बिल्कुल प्रदूषण न होना नहीं है। इनके पर्यावरणीय लाभों को केवल हरे लेबल के आधार पर नहीं, बल्कि वैज्ञानिक तथ्यों और वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर समझना चाहिए।

दीवाली की वास्तविक भावना प्रकाश, दया और खुशियाँ बाँटने में है। आइए, हम ऐसी दीवाली मनाएँ जिसमें हमारे घर रोशन हों, हवा स्वच्छ रहे और हमारा समाज स्वस्थ बने। सच्ची हरित दीवाली वही है, जिसकी खुशियों की कीमत प्रकृति को न चुकानी पड़े।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल।
प्रख्यात वैज्ञानिक
स्ट्रीट कौर चंद,
एम.एच.आर. मलोट, पंजाब –

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट
Vediccodes
VASTU · NUMEROLOGY · ASTROLOGY
परिवहन विशेष News

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

04 नवंबर 2026 | दिन का अंक: 7 — आत्मचिंतन, विश्लेषण, अंतर्ज्ञान, शोध और आंतरिक स्पष्टता

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 7 आपकी तेज नेतृत्व ऊर्जा को थोड़ा धीमा करके विश्लेषण पर ध्यान देता है। तुरंत परिणाम पाने के बजाय बड़े निर्णय की समीक्षा करें, विवरण समझें और रणनीति को बेहतर बनाएं।
रिश्ते: आप सीधे कार्रवाई चाह सकते हैं, जबकि आज चिंतन अधिक उपयोगी रहेगा। सामने वाले को स्पेस दें और समाधान देने से पहले ध्यान से सुनें।
सावधानी: अधीरता, अहंकार में प्रतिक्रिया और पर्याप्त जांच के बिना आर्थिक निर्णय लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण लक्ष्य से थोड़ा पीछे हटकर उसे गहराई से देखें और तथ्य स्पष्ट होने पर ही कदम लें।

मूलांक 2

धन व करियर: दिन 7 आपके अंतर्ज्ञान और संवेदनशीलता को बढ़ाता है। शांत वातावरण में शोध, योजना और आर्थिक विवरण की समीक्षा ऐसी बात दिखा सकती है जो जल्दबाजी में छूट जाए।
रिश्ते: भावनात्मक संवेदनशीलता मजबूत रहेगी, लेकिन आप भीतर की ओर जा सकते हैं। चुप्पी से सामने वाले से समझने की अपेक्षा करने के बजाय अपनी भावना साझा करें।
सावधानी: अत्यधिक सोच, संदेह और केवल मूड या अंतर्ज्ञान पर धन संबंधी निर्णय से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अंदर की आवाज सुनें, फिर निर्णय से पहले तथ्यों से उसकी पुष्टि करें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 7 आपकी अभिव्यक्तिपूर्ण और रचनात्मक प्रकृति में गहराई जोड़ता है। आज केवल पहचान के पीछे जाने के बजाय लेखन, शोध, शिक्षण या किसी विशेष विचार को विकसित करना अधिक लाभकारी रहेगा।
रिश्ते: बातचीत में दिखावे से अधिक सच्चाई जरूरी होगी। कई सामान्य बातचीत से अधिक एक अर्थपूर्ण संवाद प्रभावी रहेगा।
सावधानी: बिखरा ध्यान, अनावश्यक सामाजिक खर्च और गंभीर विषय से बचने के लिए मजाक का सहारा लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक रचनात्मक विचार को सोच-समझकर और अच्छी तरह शोध किए काम में बदलें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 7 आपकी व्यवस्थित प्रकृति के साथ ऑडिट, विश्लेषण और समस्या समाधान के लिए अच्छा मेल बनाता है। विस्तार से पहले सिस्टम, कॉन्ट्रैक्ट या बजट की समीक्षा करके सुधार की जगह पहचानें।
रिश्ते: आप शांत और बहुत निरीक्षण करने वाले हो सकते हैं। दूरी बनाने या अधिक आलोचना के बजाय अपनी चिंता शांति से बताएं।
सावधानी: कठोरता, निराशावाद और व्यावहारिक कदम उठाए बिना एक ही विषय का बार-बार विश्लेषण करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अनुशासन से एक समस्या की जांच करें और स्पष्ट सुधार योजना बनाएं।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 7 आपकी तेज ऊर्जा को धीमा करके सोचने को कहता है। यात्रा, निवेश या दिशा बदलने से पहले नए अवसर की अच्छी तरह जांच करें; छिपे विवरण महत्वपूर्ण हो सकते हैं।
रिश्ते: आज स्वतंत्रता के साथ निजी स्पेस की जरूरत भी महसूस हो सकती है। अपनी जरूरत स्पष्ट बताएं ताकि दूरी को उदासीनता न समझा जाए।
सावधानी: अचानक खरीदारी, बेचैनी में निर्णय और गोपनीय जानकारी बहुत सहजता से साझा करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: कदम उठाने से पहले रुकें और एक महत्वपूर्ण निर्णय में गति के बजाय गहराई चुनें।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 7 आपका ध्यान बाहरी आराम से हटाकर वास्तविक मूल्य की ओर ले जाता है। दीर्घकालिक आर्थिक प्राथमिकताओं की समीक्षा करें और वास्तविक जरूरत को लाइफस्टाइल आदत या भावनात्मक खर्च से अलग करें।
रिश्ते: आज सामाजिक गतिविधि से अधिक अर्थपूर्ण निकटता की इच्छा हो सकती है। शांत और सच्ची बातचीत किसी बड़ी योजना से अधिक विश्वास बढ़ा सकती है।
सावधानी: जरूरत से ज्यादा देना, प्रशंसा न मिलने पर दूरी बनाना और भावनात्मक आराम के लिए खर्च करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक खर्च सरल करें और एक महत्वपूर्ण रिश्ते को बिना भटकाव पूरा ध्यान दें।

मूलांक 7

धन व करियर: आपके मूलांक 7 और दिन के अंक 7 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। विश्लेषण, अंतर्ज्ञान, शोध और आत्मचिंतन बढ़ेंगे। अध्ययन, रणनीति और विशेष कार्य के लिए श्रेष्ठ दिन है, यदि सोच अंततः कार्रवाई तक पहुंचे।
रिश्ते: निजता की जरूरत आज विशेष रूप से मजबूत हो सकती है। ईमानदार संवाद जरूरी है ताकि चुप्पी अनावश्यक दूरी न बनाए।
सावधानी: अलगाव, संदेह, अत्यधिक विश्लेषण और पूर्ण निश्चितता के इंतजार में निर्णय टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एकांत का उपयोग सही ढंग से करें और एक महत्वपूर्ण समझ को व्यावहारिक अगले कदम में बदलें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 7 आपकी महत्वाकांक्षी ऊर्जा को आंकड़ों के पीछे की वास्तविकता देखने को कहता है। अतिरिक्त धन या अधिकार लगाने से पहले कॉन्ट्रैक्ट, निवेश, सिस्टम और दीर्घकालिक जोखिम की समीक्षा करें।
रिश्ते: गंभीर या शांत मूड आपको दूर दिखा सकता है। परिणाम नियंत्रित करने की कोशिश किए बिना सुनें और भावनात्मक विषयों को खुलने का समय दें।
सावधानी: कठोर निर्णय, गुप्त आर्थिक फैसले और तुरंत उत्तर के लिए दबाव बनाने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण विषय की गहराई से जांच करें और शक्ति का उपयोग तथ्यों के आधार पर करें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 7 आपकी जोशीली और उदार प्रकृति में चिंतन लाता है। देखें कि धन, समय और ऊर्जा कहां जा रही है और तुरंत पहचान के बजाय गहरे उद्देश्य वाले काम को पूरा करें।
रिश्ते: पुरानी भावनाएं प्रतिक्रिया के लिए नहीं, समझ के लिए सामने आ सकती हैं। शांत बातचीत या निजी चिंतन से अनावश्यक भावनात्मक बोझ छोड़ा जा सकता है।
सावधानी: भावनात्मक दूरी, अपराधबोध में उदारता और बिना रचनात्मक उद्देश्य पुराने विषय खोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: चिंतन की मदद से एक भावनात्मक या आर्थिक अधूरा चक्र समझदारी से पूरा करें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

दीप पर्व का आरंभ है समृद्धि का पर्व धनतेरस

आम मान्यता है कि इस दिन कुबेर अपने खजाने खोल देते हैं और अपनी पूजा करने वाले भक्तों पर जमकर कृपा करते हैं।

डॉ घनश्याम बादल

आज के युग में धन से ही जीवन में रस है और शायद इस युक्ति को मानते हुए 'धन ते रस' यानी यानी 'धनतेरस' का पर्व मनाया जाता है. कहते हैं इस पर्व को मनाने से जीवन में धन की वर्षा होती है। इस वर्ष धनतेरस 6 नवंबर को है.

धनतेरस पर लक्ष्मी पूजा त्रयोदशी तिथि के दौरान प्रदोष काल में करने का विधान है।

धनतेरस पर सर्वार्थ सिद्धि योग अच्छा माना जाता है। पंचाग के अनुसार अनुसार इस योग में शुभ कार्य करने पर उसमें सफलता हासिल होती है सर्वार्थसिद्धि योग को शुभ माना गया है क्योंकि इसमें सभी सिद्धियों का वास होता है। सर्वार्थसिद्धि योग पर राहुकाल का भी असर नहीं होता और खरीदारी करना शुभ फल देने वाला होता है। धनतेरस को धन त्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि इस दिन देवताओं के वैद्य भगवान धन्वंतरि का जन्म हुआ था।धार्मिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के समय भगवान धन्वंतरि त्रियोदशी तिथि को हाथों में अमृत का कलश लेकर प्रकट हुए थे।

कुबेर की पूजा के पीछे तीन प्रमुख मान्यताएं हैं: धन की सुरक्षा: धन अर्जित करना जितना महत्वपूर्ण है, उसका संरक्षण और सदुपयोग भी उतना ही आवश्यक है। कुबेर को धन का संरक्षक माना गया है।

समृद्धि की कामना: लक्ष्मी से धन की प्राप्ति और कुबेर से उसकी स्थिरता तथा सुरक्षा की कामना की जाती है।

धन का सदुपयोग: धार्मिक दृष्टि से धन केवल संग्रह करने की वस्तु नहीं, बल्कि लोककल्याण, दान और जरूरतमंदों की सहायता का साधन भी है।

कुबेर पूजा मंत्र भगवान कुबेर की पूजा करते समय इस मंत्र का जाप किया जाता है:

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

एक सरल मंत्र भी प्रचलित है:

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः। एक आध्यात्मिक संदेश

धनतेरस पर कुबेर की पूजा का अर्थ केवल अधिक धन पाने की कामना करना नहीं है। इसका वास्तविक संदेश यह भी है कि मनुष्य धन कमाए, उसे सुरक्षित रखे, अनावश्यक अपव्यय से बचे और उसका उपयोग परिवार, समाज तथा जरूरतमंदों के कल्याण में करे।

लक्ष्मी धन देती हैं और कुबेर उसके संरक्षण का प्रतीक हैं। लेकिन धन को सार्थकता मनुष्य के विवेक, परिश्रम और सदुपयोग से ही मिलती है।

क्या खरीदना है शुभ धनतेरस पर सोना-चांदी, आभूषण और बर्तन की खरीदारी करना बहुत ही शुभ माना गया है। धनतेरस पर खरीदी गई चीजों में तेरह गुने की वृद्धि होती है,

इसके अलावा झाड़ू और धनिए के बीज की भी खरीदारी करते हैं हिंदू धर्म में झाड़ू का संबंध मां लक्ष्मी से माना जाता है, इसलिए धनतेरस के दिन घर में नई झाड़ू लाना भी अच्छा माना जाता है। इस धनतेरस पर यदि आप सोना चांदी नहीं खरीद पा रहे हैं तो झाड़ू जरूर खरीद कर लाएं।

पीतल के बर्तन भी शुभ धनतेरस के दिन पीतल धातु खरीदना बहुत ही शुभ माना जाता है। इससे आपके घर में सुख-समृद्धि आती है। कहा जाता है कि जब समुद्र मंथन से धन्वंतरि देव प्रकट हुए थे, तो उनके हाथों में अमृत कलश था। धार्मिक मान्यता है कि ये कलश पीतल की धातु का था, इसलिए पीतल धन्वंतरि देव की धातु मानी गई है।

दीया ज़रूर जलाएं धनतेरस पांच पर्वों की दिवाली श्रंखला का पहला पर्व होता है। धनतेरस की शाम को घर के मुख्य दरवाजे और आंगन में दीये जलाए जाते हैं। अतः आप भी धनतेरस पर घर के द्वार पर कच्चे पक्के दिए जलाना न भूलें. कच्चे दिए आटे के और पक्के दिए मिट्टी के होते हैं।

पौराणिक मान्यताएं पौराणिक मान्यता के अनुसार धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि, भगवान कुबेर के साथ माता लक्ष्मी की पूजा होती है। धनतेरस के दिन लक्ष्मी चालीसा, कुबेर यंत्र और कुबेर स्रोत का पाठ करने से धन के स्वामी भगवान कुबेर और माता लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

लोककथा धार्मिक मान्यताओं के अनुसार हीमा नाम का एक बेहद लोकप्रिय राजा था। ज्योतिषाचार्य ने राजा की कुंडली देखकर बताया कि राजा की मृत्यु एक सर्प के काटने से होगी। भविष्यवाणी सुनकर राजा की पत्नी बहुत भयभीत हो गई और अपने पति के प्राणों की रक्षा के लिए उन्होंने अपने सभी सोने व चांदी के आभूषण, एक बर्तन में रखकर कमरे की दहलीज पर रख दिया और उसके पास तेल का दीपक जला दिया। मृत्यु के देवता यम रात्रि में सर्प का रूप धारण कर राजा के प्राणों को हरने के लिए आएं। चमकते गहने और दीए की रोशनी से सर्प अंधा हो गया और कमरे के भीतर प्रवेश न कर सका। गहनों की चमक के कारण सर्प, राजा को काटे बगैर वापस लौट गया। इस तरह अपनी बुद्धिमत्ता और साहस से रानी ने राजा के प्राणों बाकी रक्षा कर ली थी।



इस दीवाली घर पर बनाएं मध्य प्रदेश की मशहूर बेसन की चकती, स्वाद ऐसा कि हर कोई पूछेगा हलवाई का पता

दीवाली पर अगर आप बाजार की मिलावटी मिठाइयों की जगह घर पर ही कुछ स्वादिष्ट और शुद्ध बनाना चाहते हैं, तो बेसन की चकती आपके लिए बहुत अच्छा ऑप्शन है। बेसन की बर्फी को ही मध्य प्रदेश के कई इलाकों में बेसन की चकती कहा जाता है। इस मिठाई की खुशबू और स्वाद इतना लाजवाब होता है कि हर कोई इसे बहुत पसंद करता है। अगर आप दीवाली के मौके पर घर पर बेसन की चकती बनाना चाहते हैं, तो आइए जानें इसकी एकदम आसान रेसिपी।

बेसन की चकती रेसिपी

कुल समय : 40 mins
तैयारी का समय : 5 mins
पकाने का समय :35 mins
कोर्स : Desserts
कैलोरी :
सर्विंग : १ लोगों के लिए
व्यंजन : Indian

बेसन की चकती बनाने के लिए सामग्री:

बेसन- १ कप
चीनी- 1.5 कप
घी- 1 कप
इलायची पाउडर- 1 छोटा चम्मच
ड्राई फ्रूट्स- बादाम और पिस्ता
पानी- आधा कप

बेसन की चकती बनाने की विधि:

1 सबसे पहले एक कड़ाही में घी को गर्म करें और उसमें दो कप बेसन डालें।
२ आंच को धीमा रखते हुए लगातार चलाते हुए बेसन को भून लें। जैसे-जैसे बेसन भूनता जाएगा, वो घी



छोड़ने लगेगा और उसका रंग हल्का भूरा हो जाएगा।
३ जब बेसन का रंग गोल्डन ब्राउन हो जाए और उससे खुशबू आने लगे, तब गैस बंद कर दें।
4 अब एक पैन में डेढ़ कप पानी और आधा कप चीनी डालकर उबालें और इसे तब तक पकाएं, जब तक चिपचिपी चाशनी न बन जाएं।
5 अब तैयार की हुई चाशनी को धीमी आंच पर भुने हुए बेसन में थोड़ा-थोड़ा करके मिलाते जाएं। ध्यान रखें कि बेसन में गांठें न पड़ें।
6 इसके बाद इसे लगातार चलाते रहें, जब तक बेसन कड़ाही छोड़ने न लगे और गूंथे हुए आटे की तरह एक जगह इकट्ठा हो जाए।
7 इसके बाद इसमें इलायची पाउडर डालें और अच्छी तरह मिला लें।
8 अब एक थाली में घी लगाकर इसे चिकना कर लें और उस पर बेसन के मिश्रण को फैला दें।
9 इसके ऊपर कटे हुए बादाम और पिस्ता छिड़क दें और हल्के हाथों से दबा दें, ताकि बेसन में चिपक जाए।
10 इस मिश्रण को एक-दो घंटे के लिए सेट होने दें और जब ये अच्छी तरह ठंडा हो जाए, तो चाकू की मदद से चौकोर आकार में काट लें। बेसन की चकती बनकर तैयार है।

जीत के साथ उत्साह और मेहनत से भाग लेना बड़ी उपलब्धि : सीटीएम

झज्जर स्थित बाल भवन में सीटीएम ऋतु ने दीप प्रज्वलित कर चार दिवसीय बाल महोत्सव 2026 का किया शुभारंभ

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 03 नवंबर

जिला मुख्यालय स्थित बाल भवन में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में मंगलवार से चार दिवसीय जिला स्तरीय बाल महोत्सव-2026 का विधिवत शुभारंभ हो गया। सीटीएम ऋतु ने दीप प्रज्वलित करते हुए महोत्सव का आगाज किया। आगामी 6 नवंबर तक चलने वाले इस महोत्सव में जिला के विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी अलग-अलग प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल बाल कल्याण अधिकारी अनिल मलिक ने की। जिला बाल कल्याण अधिकारी सुरेखा हुड्डा ने सभी अतिथिगण का स्वागत किया।

बच्चों की प्रतिभा निखारने का बेहतर मंच है बाल महोत्सव

मुख्य अतिथि सीटीएम ऋतु ने कहा कि बाल महोत्सव बच्चों की प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने का महत्वपूर्ण मंच है। प्रत्येक बच्चे में कोई न कोई विशेष प्रतिभा होती है। जरूरत है उसे उचित अवसर और प्रोत्साहन देने की। ऐसे आयोजन बच्चों को अपनी कला, रचनात्मकता और कौशल प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि प्रतियोगिता में केवल जीतना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि पूरे उत्साह और मेहनत के साथ भाग लेना भी अपने आप में एक उपलब्धि है।

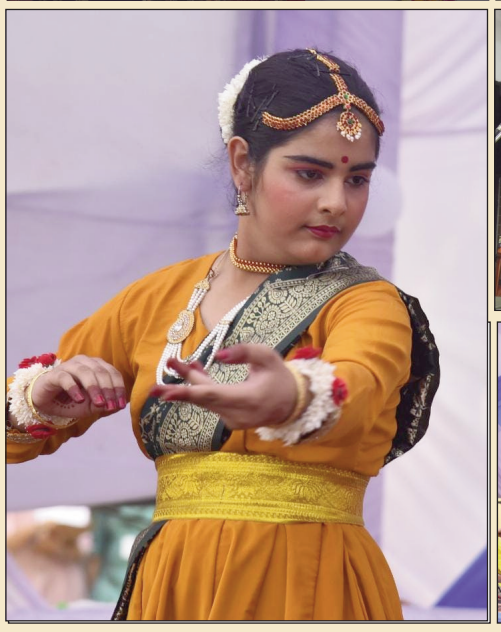
बचपन की यादें साझा कर बच्चों को दिया मेहनत का संदेश

सीटीएम ऋतु ने बाल भवन के वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि यहां आकर उन्हें अपनापन महसूस हो रहा है और बचपन की यादें ताजा हो गई हैं। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ अपने बचपन के अनुभव साझा किए और जीवन में सफलता हासिल करने के लिए अनुशासन, निरंतर मेहनत तथा समय के सदुपयोग का मंत्र दिया। उन्होंने बच्चों से अपनी रुचि के अनुसार गतिविधियों में भाग लेने और प्रत्येक अवसर से कुछ नया सीखने का आह्वान किया।

जिला स्तर के विजेता मंडल और राज्य स्तर पर दिखाएंगे प्रतिभा

जिला बाल कल्याण अधिकारी सुरेखा हुड्डा ने बताया कि 6 नवंबर तक आयोजित होने वाले बाल महोत्सव में विद्यार्थियों के लिए विभिन्न रचनात्मक, सांस्कृतिक और कलात्मक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं,जिसमें लगभग 700 बच्चे भाग ले रहे हैं। जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के विजेता मंडल स्तर पर आयोजित प्रतिस्पर्धा में भाग लेंगे। वहीं फैंसी ड्रेस, क्ले मॉडलिंग, दीया-कैंडल, कार्ड मेकिंग, भाषण, कलश सजावट, फन गेम, हैंडराइटिंग, रंगोली जैसी निर्धारित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सीधे राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलेगा। उन्होंने बताया कि महोत्सव को लेकर स्कूलों और विद्यार्थियों में खासा उत्साह है। इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य बच्चों की रचनात्मक क्षमता, कलात्मक कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ावा देना है। उन्होंने बताया कि विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेता विद्यार्थियों को 14 नवंबर को आयोजित होने वाले जिला स्तरीय बाल दिवस समारोह में सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में मंच संचालन प्रवक्ता संजय शर्मा और कृष्ण वशिष्ठ ने संयुक्त रूप से किया।








आज से 20 नवंबर तक धूल उड़ाने वाली तोड़फोड़ व खुले में निर्माण गतिविधियों पर प्रतिबंध : डीसी

डीसी ने ग्रेप-2 के तहत सभी विभागों को सख्ती से नियम लागू करने के दिए निर्देश

एनसीआर में वायु प्रदूषण रोकने के लिए सीएक्यूएम ने जारी किए अतिरिक्त एहतियाती निर्देश

औद्योगिक इकाइयों, सड़कों की धूल, वाहनों के धुएं और खुले में कचरा जलाने पर भी रहेगी कड़ी निगरानी

झज्जर, 03 नवंबर

एनसीआर में वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने बुधवार, 5 नवंबर से 20 नवंबर 2026 तक अतिरिक्त एहतियाती उपाय लागू करने के निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत इस अवधि में धूल उत्पन्न करने वाली तोड़फोड़ गतिविधियों और खुले में निर्माण कार्यों पर प्रतिबंध रहेगा। निर्धारित छूट वाली गतिविधियों को छोड़कर अन्य प्रतिबंधित गतिविधियों पर सख्ती से रोक सुनिश्चित की जाएगी। डीसी वर्षा खांगवाल ने सभी संबंधित विभागों एवं एजेंसियों को इन निर्देशों की प्रभावी अनुपालना सुनिश्चित करने के आदेश दिए हैं। डीसी ने सीएक्यूएम चेयरपर्सन की वीडियो कॉन्फ्रेंस उपरांत सम्बन्धित अधिकारियों की बैठक में आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि एनसीआर में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) के दूसरे चरण (ग्रेप-2) के तहत भी वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपाय लागू हैं। सभी विभाग अपने-अपने क्षेत्राधिकार में इन उपायों को पूरी गंभीरता से लागू करें। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रदूषण नियंत्रण के मामले में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

निर्माण एवं तोड़फोड़ गतिविधियों पर रहेगी विशेष निगरानी

डीसी ने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि 5 से 20 नवंबर तक प्रतिबंधित निर्माण एवं तोड़फोड़ गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखी जाए। सभी अधिकारी अपने क्षेत्र में नियमित निरीक्षण करें और आदेशों की अवहेलना करने वालों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि सभी विभाग पर्याप्त कर्मचारियों एवं मशीनरी की तैनाती करते हुए इन निर्देशों का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

औद्योगिक इकाइयों और प्रदूषण के अन्य स्रोतों पर सख्ती

डीसी ने हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, बहादुरगढ़ के क्षेत्रीय अधिकारी को औद्योगिक इकाइयों एवं अन्य प्रदूषणकारी गतिविधियों का सघन निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि औद्योगिक उत्सर्जन, वाहनों से होने वाले प्रदूषण, सड़कों की धूल तथा खुले में कूड़ा-कचरा और बायोमास जलाने जैसी गतिविधियों पर विशेष निगरानी रखी जाए। नियमों का उल्लंघन करने वाली इकाइयों एवं व्यक्तियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए।

सड़कों की धूल रोकने के लिए एंटी स्मॉग गन और पानी के छिड़काव पर जोर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि सड़कों पर उड़ने वाली धूल को नियंत्रित करने के लिए संबंधित विभाग एंटी स्मॉग गन और पानी के छिड़काव की व्यवस्था प्रभावी ढंग से करें। निर्माण स्थलों पर धूल को हवा में फैलने से रोकने के लिए जरूरी उपाय किए जाएं। खुले में कूड़ा-कचरा और फसल अवशेष जलाने वालों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि नियमों की अवहेलना करने वालों के चालान किए जाएं और जरूरत पड़ने पर कूड़ा जलाने वालों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज करवाई जाए।

प्रदूषण नियंत्रण में जिलावासी भी निभाएं सक्रिय भूमिका

डीसी ने जिलावासियों से वायु प्रदूषण नियंत्रण अभियान में सहयोग की अपील करते हुए कहा कि नागरिक अपने वाहनों के पीयूसी प्रमाणपत्र अपडेट रखें, लाल बत्ती पर इंजन बंद करें और वाहनों का उचित रखरखाव सुनिश्चित करें। खुले में कूड़ा न डालें और न ही जलाएं। अधिक से अधिक पौधे लगाएं तथा पर्यावरण अनुकूल गतिविधियों को अपनाएं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ हवा और स्वस्थ वातावरण के लिए प्रशासन के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक की सहभागिता जरूरी है।

यह रहे मौजूद

इस अवसर पर एडीसी जगनिवास, एसडीएम बादली विशाल कुमार, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, आरओ पॉल्युशन डॉ. सुनील श्योराण सहित सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता: एडीसी

दुर्घटनाएं रोकने के लिए ठोस रणनीति तैयार करें अधिकारी : एडीसी



एडीसी जगनिवास की अध्यक्षता में सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित

झज्जर, 3 अक्टूबर।

जिलाभर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में सड़क सुरक्षा को लेकर प्रभावी रूप से कार्य जारी हैं ऐसे में अधिकारी सड़क सुरक्षा को और अधिक मजबूत बनाने तथा दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए समन्वय के साथ कार्य करें। यह निर्देश एडीसी जगनिवास ने लघु सचिवालय सभागार में आयोजित सड़क सुरक्षा समिति की मासिक बैठक में दिए। उन्होंने कहा कि सड़क हादसों को रोकना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इससे पहले डीटीओ रवीश हुडा ने सड़क सुरक्षा को लेकर आयोजित की जा रही गतिविधियों की जानकारी दी।

एडीसी ने निर्देश दिए कि अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र में दुर्घटना संभावित स्थानों की पहचान करें, वहां सुधारात्मक उपाय करें और लोगों को जागरूक करने के लिए नियमित दौरे करें।

एडीसी जगनिवास ने कहा कि जिला में जिन स्थानों पर दुर्घटनाएं बार-बार हो रही हैं, उन्हें हॉट स्पॉट के रूप में चिह्नित किया जाए और वहां ब्लाइंड मोड़, शार्प कर्व, अवैध कट, झाड़ियां व पेड़ की टहनियों जैसी रुकावटों को तुरंत हटाया जाए। रोड मार्किंग, कैट्स आई, रिफ्लेक्टर, साइनबोर्ड और चेतावनी संकेतक शीघ्र लगाए जाएं। उन्होंने कहा कोहरे के मौसम से पहले सभी मुख्य सड़कों पर लाइटिंग और सेफ्टी डिवाइस की व्यवस्था पूरी हो जानी चाहिए। किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।

ट्रैफिक नियम तोड़ने वालों पर होगी सख्ती

एडीसी जगनिवास ने पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि ओवरस्पीड, मोबाइल फोन का प्रयोग, ड्रंकन ड्राइविंग, हेलमेट व सीट बेल्ट का उपयोग न करने जैसे नियमों के उल्लंघन पर सख्ती से चालान किए जाएं। उन्होंने कहा कि जुर्माने के साथ-साथ चालकों को सड़क सुरक्षा के प्रति संवेदनशील बनाना भी जरूरी है। एडीसी ने स्पष्ट किया कि सड़क सुरक्षा प्रशासन के लिए शीर्ष प्राथमिकता है। फील्ड विज़िट, स्कूल स्तर पर जागरूकता अभियान, दुर्घटना संभावित स्थानों पर त्वरित सुधार और सख्त प्रवर्तन के जरिए हादसों को न्यूनतम स्तर तक लाने की ठोस योजना बनाते हुए कार्य करें।

इस मौके पर विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

विद्यार्थी की शैक्षणिक क्षमता पहचान उसे बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार करें शिक्षक : डीईओ





झज्जर स्थित राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय परिसर में बोर्ड परीक्षा परिणामों में सुधार के लिए 'मिशन सफलता' का शुभारंभ

जिलाभर के 177 विद्यालय मुखियाओं ने लिया उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम का संकल्प

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 3 नवंबर।* विद्यालय शिक्षा निदेशालय के निर्देशानुसार एडीसी जगनिवास के मार्गदर्शन में कक्षा 10वीं एवं 12वीं के बोर्ड परीक्षा परिणामों में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से झज्जर जिले में विशेष अभियान मिशन 'सफलता' (स्टूडेंट फोकस्ड ऐकडेमिक लर्निंग टारगेटेड एक्शन) का शुभारंभ किया गया। इस संबंध में राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, झज्जर में जिलाभर के सभी राजकीय विद्यालयों के मुखियाओं की एक महत्वपूर्ण बैठक डीईओ रतिंद्र सिंह और डीईईओ राजबाला मलिक के नेतृत्व में आयोजित की गई। इस बीच डॉ. सुदर्शन पुनिया द्वारा पीपीटी प्रस्तुति के माध्यम से जानकारी साझा की। उन्होंने हरियाणा विद्यालय शिक्षा निदेशालय द्वारा निर्धारित मिशन सफलता की रूपरेखा, दिशा-निर्देशों एवं विभिन्न पहलों की विस्तार पूर्वक उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य केवल बोर्ड परीक्षा परिणामों में सुधार करना नहीं, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी की शैक्षणिक क्षमता को पहचानकर उसे बेहतर प्रदर्शन के लिए तैयार करना भी है।

इस अवसर पर डीईओ रतिंद्र सिंह ने विद्यालय मुखियाओं को निर्देशित किया कि विद्यार्थियों से पिछले पांच वर्षों के बोर्ड प्रश्नपत्रों का नियमित अभ्यास करवाया जाए। अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन, सैंपल पेपर का नियमित अभ्यास, ओपन बुक टेस्ट, प्रश्न पत्रों के समयबद्ध समाधान तथा उत्तर लेखन क्षमता विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया जाए। इसके साथ ही पीयर लर्निंग को प्रोत्साहित करने, विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा विषयवार कमजोरियों की पहचान कर उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था करने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि मिशन सफलता को जिले के प्रत्येक विद्यालय में पूरी गंभीरता एवं प्रतिबद्धता के साथ लागू किया जाए। उन्होंने कहा कि बोर्ड परीक्षा परिणामों में सुधार के लिए विद्यालय मुखिया, शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक सभी को एक साझा लक्ष्य के साथ कार्य करना होगा। प्रत्येक विद्यालय अपनी कार्ययोजना तैयार करे और उसकी नियमित समीक्षा सुनिश्चित करे।

वहीं डीईईओ राजबाला मलिक ने कहा कि बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करना सभी विद्यालयों की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने विद्यालय मुखियाओं से निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप निरंतर प्रयास करने, शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करने तथा विद्यार्थियों की तैयारी की नियमित मॉनिटरिंग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक विद्यालय को अपनी वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करके परिणाम सुधारने के लिए ठोस रणनीति अपनानी होगी।

विद्यालयों को तीन जोन में विभाजित करने की रणनीति

मिशन के अंतर्गत विद्यालयों को पिछले बोर्ड परीक्षा परिणामों और अर्धवार्षिक परीक्षा के आधार पर तीन जोन में विभाजित करने की रणनीति अपनाई गई है। रेड जोन में 50 प्रतिशत से कम परिणाम वाले, येलो जोन में 51 से 80 प्रतिशत तक परिणाम वाले तथा ग्रीन जोन में 80 प्रतिशत से अधिक परिणाम वाले विद्यालयों को रखा गया है। प्रत्येक जोन के विद्यालयों के लिए उनकी आवश्यकता के अनुरूप विशेष कार्ययोजना तैयार करने पर जोर दिया गया।

खंड शिक्षा अधिकारियों की रही विशेष उपस्थिति

बैठक में खंड शिक्षा अधिकारी शेर सिंह (बहादुरगढ़), सुनीता मल्हान (झज्जर), जयपाल दहिया (साल्हावास) तथा सुरेश पाल सुहाग (मातनहेल) शामिल रहे।

डीसी आज बहादुरगढ़ में सुनेंगी नागरिकों की समस्याएं

सुबह 11 बजे लघु सचिवालय स्थित कैंप कार्यालय में होगी जनसुनवाई, सभी विभागों के अधिकारी रहेंगे मौजूद

बहादुरगढ़, 03 नवंबर। बहादुरगढ़ क्षेत्र के नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए बुधवार, 04 नवम्बर को लघु सचिवालय बहादुरगढ़ स्थित कैंप कार्यालय में जनसुनवाई होगी। डीसी वर्षा खांगवाल बुधवार सुबह 11 बजे नागरिकों की समस्याएं सुनेंगी और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश देंगी। जनसुनवाई के दौरान सभी संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहेंगे, ताकि नागरिकों की शिकायतों पर उचित कार्रवाई की जा सके। नागरिकों से अपील है की कि वे निर्धारित समय पर पहुंचकर अपनी समस्याएं प्रशासन के समक्ष रखते हुए समाधान करवाएं।

फेस ऑथेंटिकेशन से घर बैठे जमा कराएं डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र : संजय फोगाट

जिला कोषाधिकारी संजय फोगाट ने पेंशनभोगियों से किया आह्वान

झज्जर, 03 नवंबर। जिला खजाना अधिकारी संजय फोगाट ने कहा कि पेंशनभोगी स्मार्टफोन के माध्यम से फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा का उपयोग कर अपना डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवा सकते हैं। सरकार की ओर से पेंशन भोगियों की सुविधा के लिए इस संबंध में विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाने की प्रक्रिया को सरल, सुविधाजनक और परेशानी रहित बनाना है। जिला खजाना अधिकारी ने बताया कि अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए जिला के सभी सहायक कोषाधिकारियों और पेंशन संबंधी कार्य करने वाले कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश जारी किए गए हैं। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश दिए कि वे पेंशनभोगियों को फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा के बारे में जागरूक करें और डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र तैयार करने व जमा करवाने में उन्हें हर संभव सहायता प्रदान करें। उन्होंने कहा कि स्मार्टफोन के जरिए फेस ऑथेंटिकेशन की सुविधा से पेंशनभोगियों को जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाने में काफी सहूलियत मिलेगी। इससे उन्हें इस कार्य के लिए अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

पेंशनभोगियों से अभियान में भागीदारी की अपील

डीटीओ संजय फोगाट ने जिला के ऐसे सभी पेंशनभोगियों से अपील की कि वे इस अभियान का लाभ उठाते हुए अपने स्मार्टफोन के माध्यम से फेस ऑथेंटिकेशन सुविधा अपनाएं और डिजिटल जीवन प्रमाण-पत्र जमा करवाएं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी अधिक से अधिक पेंशन भोगियों तक इस सुविधा की जानकारी पहुंचाने के निर्देश दिए, ताकि अभियान का लाभ पात्र लोगों तक पहुंच सके।



पुलिस, वकील और कानून का राज- आखिर समाज किस दिशा में जा रहा है?

मेरी व्यक्तिगत सोच और चिंता – P.S. Bahl - - प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

अक्सर पुलिस को लेकर तरह-तरह की आलोचनाएँ होती हैं। उसे भ्रष्ट कहा जाता है और उसकी कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए जाते हैं। जनता के अपने अनुभव और विचार हैं। हो सकता है कि बहुत-सी शिकायतें सही भी हों। लेकिन मेरा सवाल है कि क्या हम दूसरे प्रभावशाली पेशों और उनके आचरण पर भी इसी निष्पक्षता से विचार करते हैं?

सबसे पहले पुलिस की बात। पुलिस का पेशा सामान्य नौकरी नहीं है। यह चौबीस घंटे की जिम्मेदारी है। जब हम अपने परिवारों के साथ त्योहार मना रहे होते हैं, घरों में आराम कर रहे होते हैं या छुट्टियाँ बिता रहे होते हैं, तब भी पुलिसकर्मी सड़कों पर हमारी सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात होते हैं।

वे कितनी कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं, कितनी बार मारपीट, अपमान और आलोचना का सामना करते हैं, इसकी चर्चा शायद ही कभी होती है।

लेकिन मैं पुलिस की हर कार्यप्रणाली का बचाव भी नहीं करना चाहता। यह भी एक सच्चाई है कि कुछ पुलिसकर्मियों द्वारा गरीब और कमजोर लोगों के साथ दुर्व्यवहार, अनावश्यक दबाव और कभी-कभी अत्याचार की शिकायतें सामने आती हैं। कई बार ऐसा महसूस होता है कि आर्थिक रूप से सक्षम और प्रभावशाली व्यक्ति अपनी पहुँच और संसाधनों के बल पर परिस्थितियाँ संभाल लेते हैं, जबकि एक गरीब व्यक्ति अपनी बात रखने और न्याय पाने के लिए भी संघर्ष करता रह जाता है।

थानों की अपनी व्यावहारिक सीमाएँ, संसाधनों की कमी और मामलों को सुलझाने का दबाव हो सकता है। पुलिसकर्मियों की कठिनाइयों को समझना जरूरी है, लेकिन इन परिस्थितियों को किसी के साथ अन्याय या दुर्व्यवहार का औचित्य नहीं बनाया जा सकता।

गलत पुलिसकर्मी के विरुद्ध कार्रवाई होनी चाहिए और आम नागरिक के अधिकारों की रक्षा भी सुनिश्चित होनी चाहिए। लेकिन कुछ लोगों की गलतियों के लिए पूरी पुलिस व्यवस्था को बदनाम करना भी कहाँ तक उचित है?

क्या कभी हमने सोचा है कि जब किसी पुलिसकर्मी को सार्वजनिक रूप से पीटा जाता है और उसका वीडियो वायरल होता है, तो उसके परिवार पर क्या गुजरती होगी? क्या हमने कभी यह जानने की कोशिश की है कि एक पुलिसकर्मी की अपनी पारिवारिक जिंदगी कैसी होती है? उसकी परेशानियाँ क्या हैं? उसकी व्यक्तिगत जिंदगी और जिम्मेदारियों के बीच कितना संघर्ष होता है?

अब बात कानून के पेशे से जुड़े लोगों की। मैं मानता हूँ कि वकीलों में बहुत अच्छे, ईमानदार और समाज के प्रति समर्पित लोग हैं। मेरे अपने संपर्क में भी ऐसे वकील आए हैं जो गरीबों और जरूरतमंदों की मदद के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करते हैं। कुछ लोग वास्तव में देवतुल्य कार्य करते हैं। ऐसे लोगों के प्रति मेरे मन में बहुत सम्मान है।

लेकिन चिंता कुछ लोगों की उस प्रवृत्ति को लेकर है, जिसमें छोटी-सी बात को भी सामूहिक प्रतिष्ठा का प्रश्न बना दिया जाता है।

फोन पर लोगों को इकट्ठा करना, समूह बनाकर किसी स्थान या संस्थागत व्यवस्था से जुड़े मामले में पहुँच जाना और अपने संगठनात्मक प्रभाव से दबाव बनाने की कोशिश करना क्या उचित है?

कई बार सामान्य प्रशासनिक, प्रबंधन संबंधी अथवा आपसी विवादों में भी ऐसी परिस्थितियाँ देखने को मिलती हैं। यदि किसी गलत गतिविधि पर आपत्ति जताई जाए या नियमों के अनुसार कोई कदम उठाया जाए और उससे किसी प्रभावशाली व्यक्ति का व्यक्तिगत हित प्रभावित हो, तो अचानक सामूहिक हस्तक्षेप और दबाव की स्थिति पैदा हो जाती है।

मेरा सवाल किसी व्यक्ति या संस्था विशेष से नहीं, बल्कि इस प्रवृत्ति से है। क्या किसी भी पेशे की सामूहिक शक्ति का इस्तेमाल व्यक्तिगत हितों की रक्षा या दूसरों पर दबाव बनाने के लिए



होना चाहिए?

इस तरह की परिस्थितियों में कई बार अच्छे और जिम्मेदार वकील भी अनावश्यक रूप से शामिल हो जाते हैं।

यहाँ एक महत्वपूर्ण अंतर समझना होगा। वर्दीधारी पुलिस अधिकारी अपनी सेवा की प्रकृति के कारण उसी तरह संगठित होकर सामूहिक दबाव नहीं बना सकते। वे अक्सर व्यक्तिगत रूप से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं। दूसरी ओर, कुछ संगठित समूहों की सामूहिक शक्ति इतनी प्रभावशाली हो जाती है कि प्रशासनिक अधिकारी और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी दबाव महसूस करने लगते हैं।

संगठन बनाना हर किसी का अधिकार है, लेकिन संगठन की शक्ति का इस्तेमाल न्याय और कानून की मर्यादा बनाए रखने के लिए होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत मामलों में दबाव बनाने या मनमानी करने के लिए।

एक और विचारणीय बात है। आज समाज में कुछ पेशों के प्रति एक प्रकार का अविश्वास और हिचकिचाहट क्यों देखने को मिलती है? आखिर इस सामाजिक धारणा के पीछे क्या कारण हैं? क्या संबंधित पेशों के जिम्मेदार लोगों को आत्ममंथन नहीं करना चाहिए?

ट्रैफिक व्यवस्था और कानून के समान अनुपालन का प्रश्न ट्रैफिक व्यवस्था में भी ऐसी स्थिति देखने को मिलती है। यदि किसी वाहन की गलत पार्किंग है या ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन हुआ है, तो उसका चालान क्यों नहीं होना चाहिए? क्या किसी पेशे से जुड़े होने के कारण किसी व्यक्ति को नियमों से छूट मिल जानी चाहिए?

यदि एक सामान्य नागरिक का चालान हो सकता है तो किसी वकील या प्रभावशाली व्यक्ति का भी नियमों के अनुसार चालान होना चाहिए।

लेकिन यदि एक ट्रैफिक अधिकारी को यह डर रहे कि चालान करने पर एक फोन से दस-बीस लोग इकट्ठे हो जाएँगे, तो यह कानून के समान अनुपालन के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

क्या किसी व्यक्ति की पहचान, पेशा या संगठनात्मक ताकत उसके लिए कानून से ऊपर होने का आधार बन सकती है?

एक व्यक्तिगत बात भी साझा करना चाहता हूँ। आज परिस्थितियों को देखकर मैं अपने बच्चों से भी कहने लगा हूँ कि परिवार में कम-से-कम एक व्यक्ति को कानून की अच्छी जानकारी जरूर होनी चाहिए, यहाँ तक कि कोई एक बच्चा वकील ही बन जाए।

यह बात मैं किसी पेशे के प्रति आकर्षण या विरोध में नहीं कह रहा। यह मेरे मन में पैदा हुई एक चिंता है। आखिर एक सामान्य नागरिक को ऐसा क्यों महसूस होने लगा है कि अपने अधिकारों की रक्षा करने और किसी अनुचित दबाव का सामना करने के लिए उसे भी किसी कानूनी ताकत का सहारा चाहिए?

क्या यह हमारे समाज और व्यवस्था के लिए आत्ममंथन का विषय नहीं है?

अंत में मेरा सवाल बहुत सीधा है: क्या हम ऐसा समाज बना रहे हैं जहाँ कानून का पालन करने से ज्यादा महत्वपूर्ण यह हो गया है कि आपके पीछे कितने लोग खड़े हैं और आपका कितना प्रभाव है?

पुलिस की जवाबदेही होनी चाहिए, वकीलों की भी होनी चाहिए और हर प्रभावशाली व्यक्ति तथा संगठन की भी।

मेरी स्पष्ट सोच है कि कानून से ऊपर कोई नहीं होना चाहिए—न पुलिस, न वकील, न अधिकारी और न ही कोई संगठन।

कानून का सम्मान भय और दबाव से नहीं, बल्कि न्याय, निष्पक्षता और समानता से होना चाहिए। यही मेरी व्यक्तिगत राय है। किसी पूरे वर्ग को कटघरे में खड़ा करना मेरा उद्देश्य नहीं है। मेरा उद्देश्य केवल उन गलत प्रवृत्तियों पर सवाल उठाना है जो आम नागरिक के अधिकारों, कानून के राज और संस्थाओं की गरिमा को प्रभावित कर रही हैं।

आदिवासी पर जानलेवा हमला, कोइड़ा में उबाल; 2,000 से अधिक लोगों ने एनएच-520 किया जाम

कथित गो-रक्षकों की दबंगई के खिलाफ सड़कों पर उतरा जनाक्रोश, आरोपियों की गिरफ्तारी और पीड़ित को न्याय दिलाने की मांग बणई विधायक लक्ष्मण मुंडा सहित माकपा नेताओं ने संभाली आंदोलन की कमान, आदिवासी अधिकारों और कानून-व्यवस्था पर उठे गंभीर सवाल





रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र कोइड़ा/सुंदरगढ़

सुंदरगढ़ जिले के कोइड़ा ब्लॉक अंतर्गत बी. झारबेड़ा गांव में एक आदिवासी व्यक्ति पर कथित गो-रक्षकों द्वारा किए गए जानलेवा हमले ने पूरे इलाके में आक्रोश की लहर पैदा कर दी है। पीड़ित पातु मुंडा पर बिहार और झारखंड से आए बताए जा रहे तथाकथित गो-रक्षकों द्वारा बेरहमी से हमला किए जाने के आरोप के बाद स्थानीय लोगों का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा। घटना के विरोध में 2,000 से अधिक लोग राष्ट्रीय राजमार्ग-520 पर उतर आए और सड़क जाम कर अपना विरोध दर्ज कराया।

प्रदर्शनकारियों का आक्रोश केवल एक व्यक्ति पर हुए हमले तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आदिवासी समुदाय की सुरक्षा, सम्मान और संवैधानिक अधिकारों से जुड़ा गंभीर सवाल बन गया है। कानून को अपने हाथ में लेकर किसी नागरिक पर हमला करने का अधिकार किसी भी व्यक्ति या संगठन को नहीं दिया जा सकता। यदि आरोप सही हैं, तो यह कानून-व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक सौहार्द के लिए भी गंभीर चुनौती है।

आदिवासी अधिकार राष्ट्रीय मंच ने आरोपियों की तत्काल गिरफ्तारी, पीड़ित पातु मुंडा को समुचित चिकित्सा, सुरक्षा और न्याय उपलब्ध कराने की मांग की है।

बणई विधायक लक्ष्मण मुंडा, माकपा राज्य सचिव मंडल सदस्य प्रमोद कुमार सामल सहित अन्य नेताओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया।

अब प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती है कि वह जनाक्रोश को केवल आश्वासनों से शांत करने के बजाय निष्पक्ष जांच, दोषियों की गिरफ्तारी और पीड़ित को न्याय सुनिश्चित करे।

सवाल साफ है—आदिवासी समाज की सुरक्षा और कानून का राज सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी आखिर किसकी है?

आबकारी विभाग के पत्रों में अवैध शराब कारोबार के संकेत, कार्रवाई के नाम पर जांच का आदेश!



तीन वाहनों के जरिए कथित अवैध कारोबार का मामला उजागर; सहायक आबकारी आयुक्त के पत्र ने विभागीय निगरानी, जवाबदेही और स्थानीय प्रशासन की कार्यप्रणाली पर खड़े किए गंभीर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

सुंदरगढ़ जिले में अवैध शराब के कारोबार पर अंकुश लगाने के सरकारी दावों के बीच आबकारी विभाग की कार्यप्रणाली एक बार फिर सवालों के घेरे में है। सामने आए विभागीय पत्रों और उनसे संबंधित शिकायतों ने क्षेत्र में कथित अवैध शराब कारोबार तथा उसके परिवहन को लेकर गंभीर संदेह पैदा किया है। स्थिति यह है कि कार्रवाई की जिम्मेदारी संभालने वाला विभाग अब तक प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने में कितना सफल रहा है, यह स्वयं जांच का विषय बन गया है।

प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार, सहायक आबकारी आयुक्त, राउरकेला कार्यालय की ओर से संबंधित आबकारी निरीक्षकों को पत्र जारी कर मामले की जांच करने तथा संबंधित वाहनों एवं उनके मालिकों की जानकारी जुटाने का निर्देश दिया गया है। पत्र में तीन वाहनों के माध्यम से कथित अवैध कारोबार की आशंका और उससे जुड़े तथ्यों की पड़ताल करने पर जोर दिया गया है।

सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि यदि विभाग के संज्ञान में ऐसे वाहनों के माध्यम से अवैध गतिविधियों की जानकारी पहले से थी, तो समय रहते प्रभावी कार्रवाई क्यों नहीं हुई? क्या संबंधित क्षेत्रों में नियमित जांच और निगरानी की व्यवस्था केवल कागजों तक सीमित रह गई है?

विभागीय पत्राचार अपने आप में अपराध का प्रमाण नहीं है, लेकिन यह प्रशासनिक जवाबदेही तय करने की आवश्यकता अवश्य सामने लाता है। स्थानीय प्रशासन और आबकारी विभाग की भूमिका भी इसलिए महत्वपूर्ण हो जाती है कि अवैध कारोबार पर नियंत्रण केवल आदेश जारी करने से नहीं, बल्कि धरातल पर निष्पक्ष और निरंतर कार्रवाई से संभव है।

अब आवश्यकता है कि संबंधित वाहनों, उनके मालिकों, आपूर्ति स्रोतों और संभावित नेटवर्क की निष्पक्ष जांच हो तथा जांच की प्रगति सार्वजनिक की जाए। आखिर अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने की जिम्मेदारी किसकी है और जवाबदेही कौन तय करेगा?

विकास के नाम पर उपेक्षा का आक्रोश, रेललाइन निर्माण के विरोध में सड़क पर उतरे ग्रामीण



पुलिस बल की मौजूदगी में तनावपूर्ण स्थिति, जनविरोध के पीछे वर्षों की उपेक्षा और विकास कार्यों में कथित अनियमितताओं पर भी उठ रहे सवाल

सीएसआर फंड के कथित दुरुपयोग, अव्यवस्थित खर्च और बुनियादी सुविधाओं की अनदेखी ने जनता और प्रशासन के बीच बढ़ाई दूरी

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला।

रेललाइन निर्माण के विरोध में ग्रामीणों का सड़क पर उतरना और क्षेत्र में तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होना महज किसी एक परियोजना के खिलाफ असहमति का मामला नहीं है। इसके पीछे वर्षों से पनप रही जन-नाराजगी, स्थानीय अपेक्षाओं की अनदेखी और विकास के दावों तथा जमीनी हकीकत के बीच बढ़ता अंतर भी एक बड़ा कारण माना जा रहा है। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बल की तैनाती करनी पड़ी, लेकिन सवाल यह है कि आखिर जनता का भरोसा प्रशासन से लगातार क्यों कमजोर होता जा रहा है?

इस पूरे घटनाक्रम को औद्योगिक क्षेत्रों में सीएसआर (कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) फंड के खर्च के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भी देखने की जरूरत है। क्षेत्र में उद्योगों की मौजूदगी और सीएसआर मद में खर्च के दावों के बावजूद यदि ग्रामीणों को बेहतर सड़क, पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता और अन्य बुनियादी सुविधाएं नहीं मिलतीं, तो असंतोष स्वाभाविक है। सीएसआर राशि के नियोजन, आवंटन और वास्तविक उपयोग में कथित अनियमितताओं तथा जवाबदेही की कमी को लेकर भी गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

विडंबना यह है कि विकास के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च होने के दावों के बीच स्थानीय जनता स्वयं को उपेक्षित महसूस कर रही है। प्रशासनिक तंत्र केवल पुलिस बल के सहारे जनाक्रोश को दबाने का प्रयास करे, तो यह स्थायी समाधान नहीं हो सकता।

अब आवश्यकता है कि रेल परियोजना से जुड़े ग्रामीणों की आपत्तियां सुनी जाएं तथा सीएसआर खर्च का निष्पक्ष सामाजिक ऑडिट कराया जाए। जनता को आश्वासन नहीं, पारदर्शिता, न्याय और धरातल पर दिखाई देने वाला विकास चाहिए।

पशु चिकित्सा सहायता केंद्र बना सीमेंट गोदाम, सरकारी व्यवस्था की खुली पोल



पशुपालकों को बेहतर सेवाएं देने के उद्देश्य से निर्मित भवन बदहाली का शिकार; विभागीय उदासीनता और स्थानीय प्रशासन की निष्क्रियता पर उठे गंभीर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बालिशंकरा

ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले पशुपालन क्षेत्र को मजबूत बनाने तथा पशुपालकों को स्थानीय स्तर पर चिकित्सा एवं आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के सरकारी दावे बालिशंकरा प्रखंड में दम तोड़ते नजर आ रहे हैं। पशुपालकों की सुविधा के लिए लाखों रुपये की लागत से निर्मित पशु सहायता केंद्र आज अपने मूल उद्देश्य से भटककर सीमेंट गोदाम में तब्दील हो गया है। यह तस्वीर केवल एक सरकारी भवन की बदहाली नहीं, बल्कि विभागीय कार्यप्रणाली और प्रशासनिक निगरानी व्यवस्था की गंभीर खामियों को भी उजागर करती है।

जानकारी के अनुसार, पशुधन के विकास, पशुपालकों को आवश्यक परामर्श तथा पशुओं के उपचार की सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस केंद्र का निर्माण कराया गया था। लेकिन विडंबना यह है कि जिस भवन से ग्रामीणों को पशु चिकित्सा सेवाएं मिलने की उम्मीद थी, वहां अब सीमेंट की बोरियां और निर्माण सामग्री रखी जा रही हैं। भवन का उपयोग उसके निर्धारित उद्देश्य के बजाय दूसरे कार्यों में होना सरकारी संसाधनों के उपयोग पर सवाल खड़े करता है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालकों को समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना पहले से ही चुनौती बना हुआ है। ऐसे में तैयार बुनियादी ढांचे का उपयोग नहीं होना व्यवस्था की प्राथमिकताओं पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

आखिर भवन निर्माण के बाद वहां नियमित सेवाएं शुरू क्यों नहीं हुईं? संबंधित विभाग ने कर्मचारियों की नियुक्ति, संचालन और रखरखाव की जिम्मेदारी क्यों नहीं निभाई? स्थानीय प्रशासन ने निरीक्षण कर स्थिति सुधारने की पहल क्यों नहीं की?

यह मामला जिला प्रशासन, पशुपालन विभाग और संबंधित अधिकारियों से जवाबदेही तय करने की मांग करता है। सरकारी भवन जनता की सुविधा के लिए बनते हैं, गोदाम बनाने के लिए नहीं। अब आवश्यकता केवल जांच की नहीं, बल्कि केंद्र को उसके मूल उद्देश्य के अनुरूप तत्काल संचालित करने की है।

लोकतंत्र एक "नारा"

कभी व्यवस्था पर है प्रश्न उठाते,
कभी संविधान की बात सुनाते।
लेकिन जब 'अवसर' मिलता है,
वे तभी वादों को भूल भी जाते।

अब सत्ता पक्ष को भी ध्यान रहे,
अहंकार की कोई सीमा होती है।
जनता जब कभी करवट लेती है,
तब हरेक कुर्सी हिलती रहती है।

लोकतंत्र केवल एक 'नारा' नहीं,
ये जनता का परम अधिकार है।
वह सत्ताधारी हो या विपक्ष यहाँ,
इन सभी का एक ही आधार है।

रोटी जले तो तुरंत 'आँच' बदलो,
नहीं है चूल्हा बदलने की जरूरत।
भोली-भाली जनता को सपने नहीं,
काम व विकास दिखाओ झटपट।

क्योंकि लोकतंत्र में आखिरकार,
जन-जन की ही होती सरकार है,
कुर्सी आती-जाती रहती हरबार,
यहाँ जनता ही असली दरबार है!



संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

एक शिक्षित बेटी, कई पीढ़ियों का भविष्य और विकसित समाज की नींव





● डॉ. विजय गर्ग

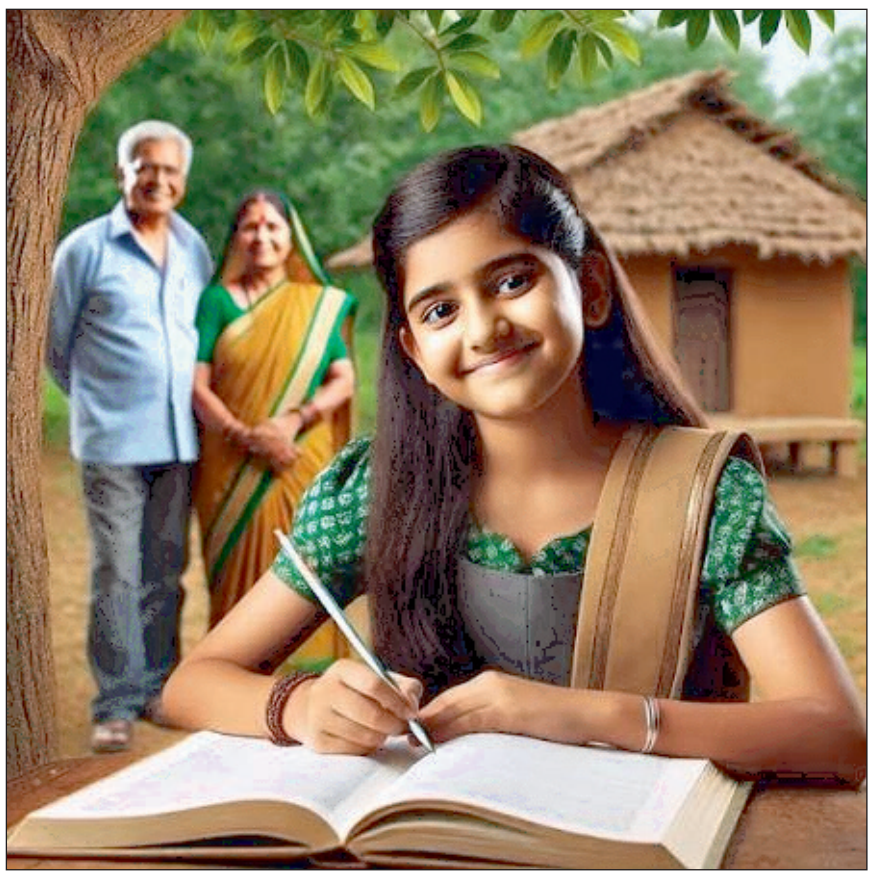
इतिहास साक्षी है कि जिन समाजों ने महिलाओं की शिक्षा को महत्व दिया, उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझती है। उसमें अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक भेदभाव और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस होता है। वह अपने परिवार और समाज में वैज्ञानिक सोच, समानता और तार्किक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

किसी भी समाज की प्रगति का आकलन केवल उसकी इमारतों, सड़कों, उद्योगों या आर्थिक विकास से नहीं किया जा सकता, बल्कि इस बात से भी किया जाता है कि उस समाज में बेटियों को शिक्षा के कितने अवसर उपलब्ध हैं। जो समाज अपनी बेटियों को पढ़ने, सोचने, निर्णय लेने और आगे बढ़ने की स्वतंत्रता देता है, वही वास्तविक अर्थों में विकसित और प्रगतिशील समाज कहलाता है।

बेटी की शिक्षा केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करने तक सीमित नहीं होती। यह कई पीढ़ियों के भविष्य को संवारने की प्रक्रिया है। एक शिक्षित बेटी जब अपने परिवार का हिस्सा बनती है, तो वह अपने ज्ञान, विचारों और संस्कारों से पूरे परिवार को प्रभावित करती है। वह अपने बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण और अच्छे पालन-पोषण के प्रति अधिक जागरूक होती है। इस प्रकार उसकी शिक्षा का लाभ केवल अगली पीढ़ी तक ही नहीं, बल्कि आने वाली कई पीढ़ियों तक पहुँचता है।

इतिहास साक्षी है कि जिन समाजों ने महिलाओं की शिक्षा को महत्व दिया, उन्होंने सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझती है। उसमें अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियों, लैंगिक भेदभाव और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस होता है। वह अपने परिवार और समाज में वैज्ञानिक सोच, समानता और तार्किक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।

आज के आधुनिक युग में बेटियों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ उपलब्ध हैं। वे डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, उद्यमी और उत्कृष्ट खिलाड़ी बन रही हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान से लेकर कृषि तक और तकनीक से लेकर राजनीति तक, वे लगभग हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर रही हैं। उनकी उपलब्धियाँ स्पष्ट करती हैं कि समान अवसर मिलने पर बेटियाँ किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहतीं।



फिर भी ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में बेटियों की शिक्षा के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। गरीबी, बाल विवाह, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, विद्यालयों की दूरी, डिजिटल सुविधाओं की कमी और पुरानी सामाजिक मानसिकता उनकी पढ़ाई में बाधा बनती हैं। कई परिवार आज भी बेटों की शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं और बेटियों की पढ़ाई को अतिरिक्त खर्च समझते हैं। इस सोच को बदलने की आवश्यकता है। बेटी की शिक्षा खर्च नहीं, बल्कि समाज के भविष्य में किया गया सबसे महत्वपूर्ण निवेश है।

इस दिशा में माता-पिता, शिक्षकों, सरकार और समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है। प्रत्येक बेटी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षित विद्यालयी वातावरण, डिजिटल सुविधाएँ और अपनी रुचि के अनुसार करियर चुनने के अवसर मिलने चाहिए। विद्यालयों में उन्हें केवल पाठ्यक्रम का ज्ञान ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, जीवन-कौशल, वित्तीय साक्षरता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित करने के अवसर मिलने चाहिए।

माता-पिता को बेटियों की तुलना बेटों से करने के बजाय उनकी व्यक्तिगत प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानना चाहिए। बेटियों को घर की जिम्मेदारियाँ निभाने के साथ-साथ अपने सपनों को पूरा करने का भी पूरा अवसर मिलना चाहिए। समाज को सफल और प्रतिभाशाली महिलाओं की प्रेरणादायक कहानियों को सामने लाना चाहिए, ताकि दूसरे परिवार भी अपनी बेटियों की शिक्षा के लिए प्रोत्साहित हों।

शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें बेटियों को प्रश्न पूछने, अपने विचार व्यक्त करने, वैज्ञानिक गतिविधियों में भाग लेने और नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। विद्यालय ऐसा वातावरण प्रदान करें जहाँ प्रत्येक लड़की स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और आत्मविश्वास से भरपूर महसूस करे।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि बेटी को शिक्षित करना केवल एक परिवार का निर्णय नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। एक शिक्षित बेटी स्वयं को सशक्त बनाती है, परिवार को जागरूक करती है और समाज को नई दिशा प्रदान करती है। यदि हमें वास्तव में समृद्ध, समानतापूर्ण और विकसित भारत का निर्माण करना है, तो प्रत्येक बेटी के लिए शिक्षा के द्वार खोलने होंगे।

एक शिक्षित बेटी केवल अपना भविष्य नहीं बदलती, बल्कि अपने परिवार और समुदाय में जागरूकता, आत्मविश्वास और प्रगति का संचार करती है। उसका ज्ञान बच्चों के विचारों को आकार देता है, सामाजिक मूल्यों को मजबूत करता है और राष्ट्र के विकास में योगदान देता है।

एक शिक्षित बेटी केवल परिवार का गौरव नहीं होती, बल्कि कई पीढ़ियों की आशा और प्रगतिशील, समावेशी एवं विकसित समाज की मजबूत नींव होती है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक

दीपावली और बंदी छोड़ दिवस: स्वतंत्रता, बलिदान और मानवता का प्रकाश

डॉ. विजय गर्ग

भारत त्योहारों और सांस्कृतिक परंपराओं का देश है। यहाँ प्रत्येक त्योहार अपने साथ इतिहास, आस्था, सामाजिक संदेश और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा लेकर आता है। दीपावली ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पर्व है, जो अंधकार पर प्रकाश, बुराई पर अच्छाई और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है। पंजाब में दीपावली का संबंध सिख इतिहास के महान पर्व बंदी छोड़ दिवस से भी जुड़ा हुआ है। यह दिन केवल दीप जलाने और खुशियाँ मनाने का अवसर नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, त्याग, न्याय और मानवता के प्रति समर्पण को याद करने का दिन है।

बंदी छोड़ दिवस का ऐतिहासिक महत्व

सिख इतिहास में बंदी छोड़ दिवस का विशेष स्थान है। यह पर्व छठे सिख गुरु, श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी की ग्वालियर के किले से रिहाई की स्मृति में मनाया जाता है। ऐतिहासिक परंपराओं के अनुसार, गुरु साहिब को मुगल सम्राट जहाँगीर के शासनकाल में ग्वालियर के किले में नजरबंद रखा गया था। उस समय वहाँ अनेक हिंदू राजा भी कैद थे।

जब गुरु हरगोबिंद साहिब जी की रिहाई का समय आया, तो उन्होंने केवल अपनी स्वतंत्रता स्वीकार करने के बजाय अन्य बंदी राजाओं की रिहाई की भी माँग की। परंपरा के अनुसार, गुरु साहिब ने 52 राजाओं को अपने साथ मुक्त करवाया। इसी कारण उन्हें 'बंदी छोड़ दाता' कहा जाता है।

यह घटना सिख इतिहास में मानवता, उदारता और दूसरों की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने की महान मिसाल बन गई। गुरु साहिब ने यह संदेश दिया कि सच्ची स्वतंत्रता केवल स्वयं मुक्त होने में नहीं, बल्कि दूसरों को भी अन्याय और बंधनों से मुक्त कराने में है।

दीपावली और बंदी छोड़ दिवस का संबंध

सिख परंपरा के अनुसार, गुरु हरगोबिंद साहिब जी की ग्वालियर से वापसी के अवसर पर अमृतसर में श्री हरिमंदिर साहिब को दीपों से सजाया गया था। इसी ऐतिहासिक स्मृति के कारण पंजाब में दीपावली के दिन बंदी छोड़ दिवस भी श्रद्धा और उत्साह से मनाया जाता है।

इस अवसर पर श्री हरिमंदिर साहिब और श्री अकाल तख्त साहिब में विशेष सजावट की जाती है। श्रद्धालु गुरुद्वारों में माथा टेकते हैं, गुरबाणी का कीर्तन सुनते हैं और दीप जलाकर खुशी व्यक्त करते हैं। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर इस दिन रोशनी से जगमगा उठता है। आतिशबाजी और दीपों की सुंदरता वातावरण को उत्सवमय बना देती है।

स्वतंत्रता और मानवता का संदेश

बंदी छोड़ दिवस का महत्व केवल एक ऐतिहासिक घटना तक सीमित नहीं है। यह हमें जीवन के अनेक महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाता है। गुरु हरगोबिंद साहिब जी ने अपने आचरण से स्पष्ट किया कि शक्ति का उपयोग कमजोरों की रक्षा और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने के लिए होना चाहिए।

आज भी समाज में अनेक प्रकार की बेड़ियाँ मौजूद हैं। गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव, जातिवाद, नशा, शोषण और सामाजिक असमानता मनुष्य की स्वतंत्रता में बाधा बनते हैं। ऐसे में बंदी छोड़ दिवस हमें इन बंधनों को समाप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

यदि हम किसी जरूरतमंद को शिक्षा दिलाने में सहायता करते हैं, किसी गरीब परिवार का सहारा बनते हैं, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाते हैं या किसी निराश व्यक्ति के जीवन में आशा का दीप जलाते हैं, तो हम इस पर्व की वास्तविक भावना को अपनाते हैं।

आज के समय में पर्व की प्रासंगिकता

आधुनिक युग में त्योहारों का स्वरूप बदल रहा है। कई बार उत्सव केवल खरीदारी, सजावट, मिठाइयों और आतिशबाजी तक सीमित हो जाते हैं। हमें इनके वास्तविक संदेश को भी समझना चाहिए। दीपावली हमें अपने भीतर के अज्ञान, अहंकार, ईर्ष्या और नकारात्मकता को दूर करने की प्रेरणा देती है, जबकि बंदी छोड़ दिवस हमें दूसरों की पीड़ा समझने और उनकी स्वतंत्रता एवं सम्मान के लिए कार्य करने का संदेश देता है।

इस अवसर पर हमें पर्यावरण संरक्षण का भी ध्यान रखना चाहिए। अधिक ध्वनि और वायु प्रदूषण फैलाने वाली आतिशबाजी से बचकर मिट्टी के दीये जलाना, जरूरतमंदों के साथ खुशियाँ बाँटना और स्वच्छ वातावरण बनाए रखना बेहतर विकल्प हैं।

निष्कर्ष

दीपावली और बंदी छोड़ दिवस का संगम हमें प्रकाश, स्वतंत्रता, त्याग और मानवता का अनमोल संदेश देता है। श्री गुरु हरगोबिंद साहिब जी का जीवन हमें सिखाता है कि महानता अपने अधिकारों की रक्षा करने के साथ-साथ दूसरों के अधिकारों के लिए खड़े होने में भी है।

आइए, इस पावन अवसर पर हम केवल घरों और गुरुद्वारों को ही नहीं, बल्कि अपने विचारों और व्यवहार को भी प्रकाशमय बनाएँ। किसी दुखी चेहरे पर मुस्कान लाएँ, किसी जरूरतमंद की सहायता करें और समाज से अन्याय तथा भेदभाव मिटाने का संकल्प लें।

यही दीपावली और बंदी छोड़ दिवस की सच्ची भावना है—स्वयं प्रकाशमान बनना और दूसरों के जीवन में भी स्वतंत्रता, सम्मान तथा खुशियों का प्रकाश फैलाना।

मानव, मशीन और गणित: बुद्धिमत्ता की नई सीमाओं की खोज

डॉ. विजय गर्ग

गणित मानवता की सबसे महान बौद्धिक उपलब्धियों में से एक रहा है। साधारण वस्तुओं की गिनती से लेकर दूरस्थ आकाशगंगाओं की खोज तक, पुलों के निर्माण से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास तक, गणित ने सभ्यता की प्रगति को दिशा दी है। सदियों से मानवीय बुद्धिमत्ता गणितीय खोजों की प्रमुख प्रेरक शक्ति रही है। लेकिन आज मशीनें गणित को समझने, सिखाने और उसके उपयोग करने के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव ला रही हैं। मानव बुद्धिमत्ता, मशीनों और गणित का यह संगम ज्ञान के एक नए और रोमांचक युग का द्वार खोल रहा है।

प्राचीन काल में गणित का विकास मानवीय अवलोकन, तार्किक चिंतन और व्यावहारिक आवश्यकताओं के आधार पर हुआ। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, यूक्लिड, न्यूटन और रामानुजन जैसे महान गणितज्ञों ने गणितीय चिंतन की सीमाओं का विस्तार किया। उनके योगदान ने मानवता को संख्याओं, ज्यामिति, बीजगणित, कलन और प्राकृतिक संसार के नियमों को समझने में सहायता की। उस समय गणित मुख्य रूप से मानवीय जिज्ञासा, रचनात्मकता और बौद्धिक प्रयासों का परिणाम था।

यांत्रिक गणना उपकरणों और बाद में कंप्यूटरों के आविष्कार ने एक बड़ा परिवर्तन ला दिया। मशीनें जटिल गणनाएँ मनुष्यों की तुलना में कहीं अधिक तेजी और सटीकता से करने लगीं। जिन कार्यों में पहले कई घंटे या महीने लगते थे, वे कुछ ही सेकंड में पूरे होने लगे। कंप्यूटरों ने विशाल मात्रा में आँकड़ों का विश्लेषण करने, कठिन समीकरण हल करने तथा विज्ञान, इंजीनियरिंग, अर्थशास्त्र और चिकित्सा के लिए गणितीय मॉडल विकसित करने की संभावनाएँ बढ़ा दीं।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव और मशीन के इस संबंध को एक नए स्तर पर पहुँचा दिया है। आधुनिक एआई प्रणालियाँ गणितीय पैटर्न पहचान सकती हैं, समीकरण हल कर सकती हैं, सांख्यिकीय आँकड़ों का विश्लेषण कर सकती हैं, गणितीय प्रमाणों में सहायता कर सकती हैं और कंप्यूटर आधारित मॉडल तैयार कर सकती हैं। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम आँकड़ों में संबंधों को पहचानने और भविष्यवाणियाँ करने के लिए गणितीय सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। गणित केवल मशीनों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला साधन नहीं है, बल्कि यह बुद्धिमान मशीनों के निर्माण की बुनियाद भी है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और गणित का बदलता स्वरूप

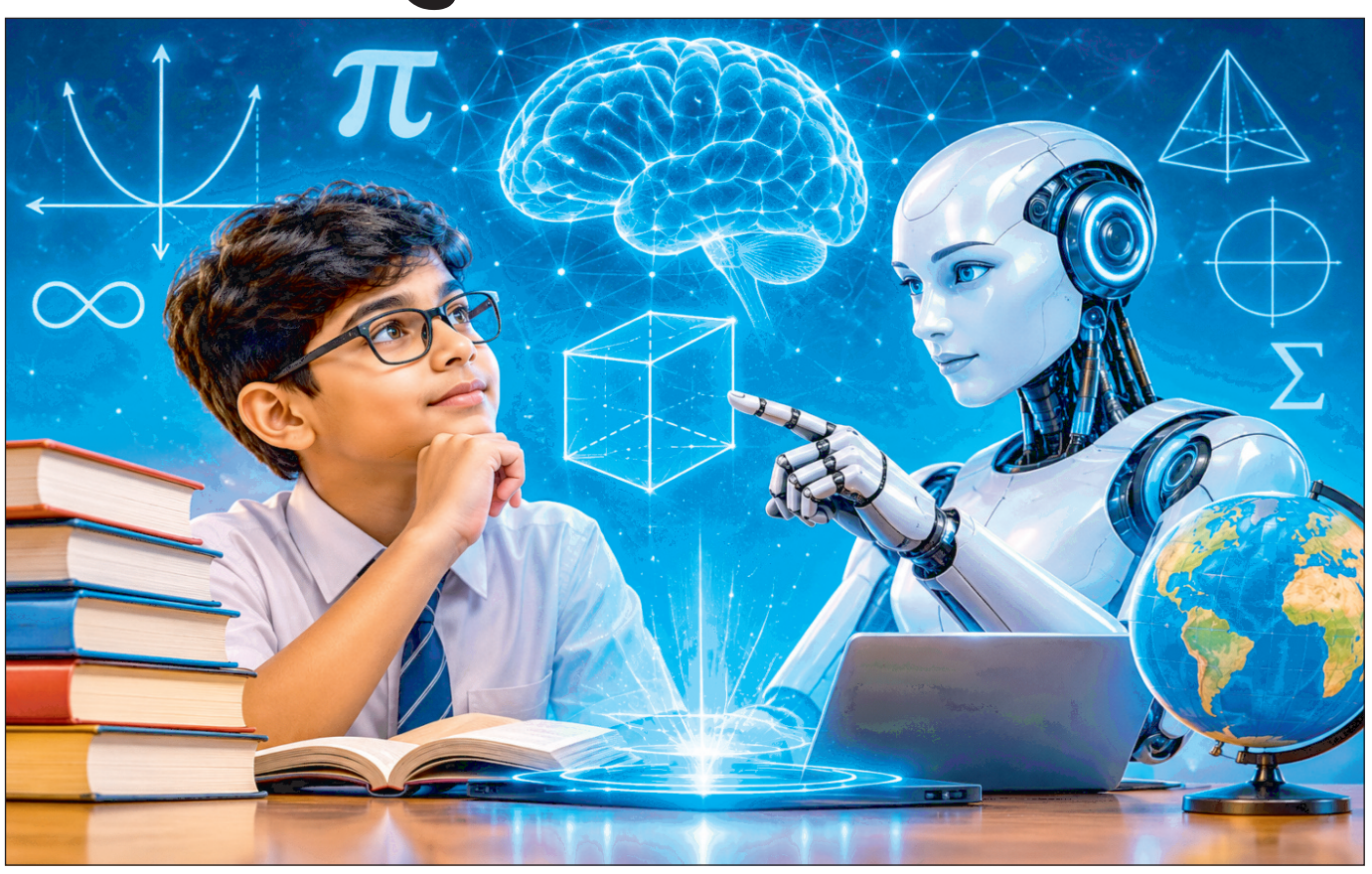
कृत्रिम बुद्धिमत्ता गणितीय समस्याओं को हल करने के पारंपरिक तरीकों को बदल रही है। पहले विद्यार्थी और शोधकर्ता गणनाएँ करने तथा निर्धारित प्रक्रियाओं का पालन करने में काफी समय लगाते थे। आज एआई आधारित उपकरण अनेक सामान्य कार्य तेजी से पूरा कर सकते हैं। इससे मनुष्य गहन चिंतन, विश्लेषण, व्याख्या और रचनात्मकता पर अधिक ध्यान दे सकते हैं।

उदाहरण के लिए, एआई जटिल बीजगणितीय समीकरणों को हल करने, ज्यामितीय संरचनाओं को समझने, बड़े आँकड़ों का विश्लेषण करने और गणितीय संबंधों की खोज में सहायता कर सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में कंप्यूटेशनल गणित जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का अनुकरण करने, बीमारियों के स्वरूप का अनुमान लगाने, नई सामग्रियों को विकसित करने और जटिल जैविक प्रणालियों को समझने में मदद करता है।

हालाँकि, मशीन द्वारा सही उत्तर प्रस्तुत कर देना इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह गणितीय अवधारणा को उसी प्रकार समझती है जैसे मनुष्य समझता है। मनुष्य गणित को अपने अनुभव, अंतर्ज्ञान, कल्पनाशक्ति और सामाजिक वास्तविकताओं से जोड़ सकता है। गणितीय परिणामों के अर्थ और उपयोगिता का मूल्यांकन करने में ये गुण आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

गणितीय शिक्षा का भविष्य

भविष्य की कक्षा पारंपरिक कक्षा से काफी अलग होगी। केवल सूत्रों को याद करने और बार-बार अभ्यास करने के बजाय गणित की शिक्षा में अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान की क्षमता पर अधिक जोर दिया जाएगा।



एआई आधारित शिक्षण मंच प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति और क्षमता के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षा उपलब्ध करा सकते हैं। बीजगणित में कठिनाई महसूस करने वाले विद्यार्थी को अतिरिक्त व्याख्या, उदाहरण और अभ्यास प्रश्न मिल सकते हैं। वहीं मूलभूत अवधारणाओं को समझने वाला विद्यार्थी उन्नत गणितीय विषयों का अध्ययन कर सकता है।

शिक्षक की भूमिका समाप्त नहीं होगी, बल्कि उसमें बदलाव आएगा। शिक्षक मार्गदर्शक, प्रेरक और सलाहकार के रूप में विद्यार्थियों में जिज्ञासा, आत्मविश्वास और स्वतंत्र चिंतन की क्षमता विकसित करेंगे। तकनीक जानकारी और समाधान दे सकती है, लेकिन विद्यार्थियों को सार्थक प्रश्न पूछने और संसार को समझने के लिए प्रेरित करना शिक्षक का महत्वपूर्ण कार्य रहेगा।

मानवीय बुद्धिमत्ता बनाम मशीन बुद्धिमत्ता

आधुनिक युग का एक बड़ा प्रश्न यह है कि क्या मशीनें अंततः गणित में मानवीय बुद्धिमत्ता से आगे निकल जाएँगी? कंप्यूटर पहले से ही असाधारण गति से गणनाएँ करते हैं और एआई प्रणालियाँ ऐसी अनेक समस्याएँ हल कर सकती हैं, जिनके लिए पहले उन्नत मानवीय विशेषज्ञता की आवश्यकता होती थी। फिर भी गणितीय बुद्धिमत्ता केवल गति और गणना क्षमता तक सीमित नहीं है।

मानव गणितज्ञों में अंतर्ज्ञान, कल्पनाशक्ति और नए प्रश्नों की पहचान करने की क्षमता होती है। वे स्थापित मान्यताओं को चुनौती दे सकते हैं, नए दृष्टिकोण विकसित कर सकते हैं और एक-दूसरे से असंबंधित दिखाई देने वाले विचारों को जोड़ सकते हैं। मशीनें इन प्रक्रियाओं में तेजी से सहायता कर रही हैं, लेकिन किन समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए और उनके समाधान कितने सार्थक हैं, इसका निर्णय करने में मानवीय विवेक महत्वपूर्ण है।

इसलिए भविष्य में मनुष्य और मशीनों के बीच पूर्ण प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग की संभावना अधिक है।

नई संभावनाएँ और उभरती चुनौतियाँ

गणित और बुद्धिमान मशीनों का एकीकरण रोबोटिक्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, वित्तीय मॉडलिंग, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा और जलवायु विज्ञान में नए अवसर पैदा करेगा। उन्नत गणितीय एल्गोरिदम उद्योगों की कार्यक्षमता बढ़ाने, संसाधनों की बर्बादी कम करने और नवीन तकनीकों के विकास में मदद करेंगे।

इसके साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आएँगी। एआई पर अत्यधिक निर्भरता विद्यार्थियों के बुनियादी गणितीय कौशल को कमजोर कर सकती है, यदि वे स्वतंत्र रूप से सोचने और अभ्यास करने की आदत छोड़ दें। एआई द्वारा प्रस्तुत गलत समाधान विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को भ्रमित कर सकते हैं। आँकड़ों की गोपनीयता, एल्गोरिदम में पक्षपात, तकनीक तक असमान पहुँच और डिजिटल विभाजन भी महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं।

इसलिए तकनीकी प्रगति के साथ नैतिक जिम्मेदारी, वैज्ञानिक समझ और मजबूत शैक्षिक आधार भी आवश्यक हैं।

वर्तमान से आगे क्या है?

अगला चरण ऐसी बुद्धिमान प्रणालियों का हो सकता है, जो नए गणितीय सिद्धांतों की खोज, जटिल गणितीय संरचनाओं के अध्ययन और वैज्ञानिक उपलब्धियों में योगदान देने में सक्षम हों। क्वांटम कंप्यूटर कुछ विशेष प्रकार की गणनात्मक समस्याओं को हल करने के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं। मानव शोधकर्ता और एआई प्रणालियाँ मिलकर ऐसे प्रश्नों की खोज कर सकती हैं, जो वर्तमान में हमारी व्यावहारिक क्षमताओं से परे हैं।

फिर भी गणित का मूल आधार जिज्ञासा और ब्रह्मांड को समझने की मानवीय इच्छा ही रहेगा। गणनाएँ चाहे मानव मस्तिष्क करे, सुपरकंप्यूटर करे या उन्नत एआई प्रणाली, तर्क, पैटर्न और संबंधों के मूल सिद्धांत खोज की दिशा निर्धारित करते रहेंगे।

अंततः भविष्य केवल मशीनों का नहीं होगा और न ही तकनीक से अलग काम करने वाले मनुष्यों का। भविष्य मानवीय रचनात्मकता और मशीनों की क्षमता के बीच बुद्धिमत्तापूर्ण सहयोग का होगा।

निष्कर्ष

मानव, मशीन और गणित ज्ञान के भविष्य को आकार देने वाली तीन शक्तिशाली शक्तियाँ हैं। मानवीय बुद्धिमत्ता कल्पनाशक्ति और उद्देश्य प्रदान करती है, मशीनें गति और गणनात्मक क्षमता उपलब्ध कराती हैं, जबकि गणित इन दोनों को जोड़ने वाली भाषा और आधार प्रदान करता है।

वास्तविक चुनौती मशीनों से मानवीय सोच को प्रतिस्थापित करना नहीं, बल्कि उनका उपयोग करके मानवीय क्षमताओं का विस्तार करना है। विद्यार्थियों को गणित केवल उत्तर निकालने के लिए नहीं, बल्कि प्रश्न पूछने, विश्लेषण करने, नवाचार करने और वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए सीखना चाहिए।

भविष्य उन्हीं लोगों का होगा, जो गणितीय दृष्टिकोण से सोच सकेंगे, तकनीक का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करेंगे और रचनात्मकता, विवेक तथा जिम्मेदारी जैसे मानवीय गुणों को बनाए रखेंगे। गणित की अगली क्रांति शुरू हो चुकी है और इसकी संभावनाएँ केवल उन प्रश्नों से सीमित हैं, जिन्हें पूछने का साहस हम करते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। शिक्षाविद्।
प्रख्यात गणितज्ञ
स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर.
मलोट, पंजाब – 152107

उपायुक्त की अध्यक्षता में जिला स्तरीय वन हेल्थ समिति की बैठक

परिवहन विशेष न्यूज



खूंटी ।समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त मो० जावेद हुसैन की अध्यक्षता में जिला स्तरीय वन हेल्थ (One Health) समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में वन हेल्थ की अवधारणा के प्रभावी क्रियान्वयन, मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के बीच आपसी संबंधों तथा विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई ।बैठक में वन हेल्थ (One Health) समिति के उद्देश्यों एवं कार्यों की जानकारी दी गई। मानव, पशु एवं पर्यावरण के स्वास्थ्य को एक-दूसरे से जुड़ा मानते हुए स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों की समय पर पहचान, निगरानी, रोकथाम एवं प्रभावी नियंत्रण सुनिश्चित करना है। विशेष रूप से पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों की रोकथाम, संभावित संक्रमण की समय रहते पहचान तथा आवश्यक एहतियाती कदम उठाने पर जोर दिया गया ।इस दौरान एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस (AMR) अर्थात एंटीबायोटिक दवाओं के अनावश्यक एवं अनुचित उपयोग के कारण दवाओं के प्रति बढ़ते प्रतिरोध की समस्या पर नियंत्रण, सुरक्षित खाद्य एवं पेयजल, स्वच्छता तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा की गई। साथ ही स्वास्थ्य, पशुपालन, वन एवं पर्यावरण सहित संबंधित विभागों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित कर सूचनाओं के आदान-प्रदान एवं संयुक्त कार्रवाई की आवश्यकता पर बल दिया गया।

उपायुक्त ने कहा कि वन हेल्थ की अवधारणा को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए सभी संबंधित विभागों की सक्रिय भागीदारी एवं आपसी समन्वय आवश्यक है। उन्होंने सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ जिला स्तर पर नियमित रूप से रिपोर्टिंग करने का निर्देश दिया, ताकि स्वास्थ्य एवं पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं तथा संभावित जोखिमों को समय रहते चिह्नित किया जा सके और उन पर जिला स्तर से आवश्यक एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभागों से प्राप्त रिपोर्ट एवं सूचनाओं के आधार पर समस्याओं का आकलन कर उनके समाधान की दिशा में समन्वित पहल की जाएगी ।बैठक में सिविल सर्जन, आयुष चिकित्सक, वन प्रमंडल पदाधिकारी दिलीप कुमार यादव, जिला पंचायती राज पदाधिकारी, जिला पशुपालन पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी समेत समिति के अन्य सदस्य एवं संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

सीयूएसबी के ऐतिहासिक अध्ययन एवं पुरातत्व विभाग के विद्यार्थियों ने इंडोनेशिया के बाली में एशिया-पैसिफिक कांफ्रेंस में शोधपत्र प्रस्तुत किया

परिवहन विशेष न्यूज



गयाजी।दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय (सीयूएसबी) के ऐतिहासिक अध्ययन एवं पुरातत्त्व विभाग के परास्नातक (इतिहास) के दो विद्यार्थियों अदिति सिन्हा एवं अमन कुमार ने इन्डोनेशिया के बाली में मिनिस्ट्री ऑफ़ मरीन अफेयर्स एवं फिशरीज द्वारा छठे मेरीटाइम एवं कल्चरल हेरिटेज थीम पर आयोजित एशिया- पैसिफिक कांफ्रेंस (एपीसीओएनएफ - एमयूसीएच-2026) में शोध पत्र प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह ने विद्यार्थियों को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी है। साथ ही इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुधांशु कुमार झा, अदिति एवं अमन के मेंटर डॉ रोहित कुमार, डॉ. नीरज कुमार सिंह तथा विभाग के अन्य शिक्षक डॉ. प्रीती अनिल खंडारे, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. आनंद गुप्ता ने दोनों छात्रों को इस अकादमिक उपलब्धि के लिए बधाई दिया है ।

जन सम्पर्क पदाधिकारी (पीआरओ) मोहम्मद मुदस्सीर आलम ने बताया कि प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित एशिया- पैसिफिक कांफ्रेंस के इस वर्ष का विषय "ट्रेडिशन एंड ट्राजेक्ट्रीज : मेरीटाइम हेरिटेज एंड ब्लू इकोनोमी इन एशिया-पेसिफिक" रखा गया था। अदिति ने 'गयाज पितृपक्ष मेलाः ए कांफ्लुएंस ऑफ़ रिचुअल, माइथोलाजी एंड कल्चर' (गया का पितृपक्ष मेलाः अनुष्ठान, पौराणिक कथाओं और संस्कृति का संगम) विषय पर तथा अमन ने 'घाट्स इन पटनाः रिवरीन हेरिटेज एंड कम्युनिटीज' (पटना के घाटः नदी तटीय विरासत एवं समुदाय) विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। कांफ्रेंस के आयोजकों द्वारा दोनों विद्यार्थियों को आवागमन एवं आवसन की निःशुल्क सुविधा प्रदान की गयी थी।

छठ महापर्व को लेकर उपायुक्त मो० जावेद हुसैन ने विभिन्न छठ घाटों का किया निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज



खूंटी। आगामी छठ महापर्व के मद्देनजर उपायुक्त मो० जावेद हुसैन ने जिले के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने राजा तालाब, साहू तालाब सहित अन्य छठ घाटों का जायजा लिया तथा पर्व के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा एवं स्वच्छता को लेकर की जा रही तैयारियों की समीक्षा की ।निरीक्षण के दौरान उपायुक्त ने नगर पंचायत के कार्यपालक पदाधिकारी को सभी छठ घाटों की समुचित साफ-सफाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। उन्होंने घाटों पर पानी की गहराई का आकलन कर खतरनाक एवं गहरे स्थानों को चिन्हित करने तथा वहां सुरक्षा के दृष्टिकोण से बैरिकेडिंग कराने को कहा। साथ ही, घाटों पर गोताखोरों की प्रतिनियुक्ति, चेंजिंग रूम, मोबाइल टॉयलेट की व्यवस्था एवं पर्याप्त लाइट की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो ।छठ महापर्व के दौरान श्रद्धालुओं को स्वच्छ, सुरक्षित एवं सुविधाजनक वातावरण उपलब्ध कराया जा सके ।निरीक्षण के दौरान अनुमंडल पदाधिकारी, खूंटी, प्रभारी पदाधिकारी, गोपनीय शाखा, प्रखंड विकास पदाधिकारी, थाना प्रभारी खूंटी सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

डीएवी आरजीटीपीपी पब्लिक स्कूल, खेदड़ में आयोजित विशेष कार्यक्रम

इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, आत्मविश्वास व सांस्कृतिक गौरव की भावना को करते हैं सुदृढ़ -- कोमल शर्मा



हरियाणा/ हिसार (राजेश सलूजा) : डीएवी आरजीटीपीपी पब्लिक स्कूल, थर्मल कॉलोनी, खेदड़ में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में एक्सईन संदीप वर्मा ने शिरकत की और अध्यक्षता प्रधानाचार्या कोमल शर्मा ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया और इन गतिविधियों में विद्यार्थियों ने एकता, भाईचारे और स्वस्थ जीवन का संदेश दिया। नर्सरी से कक्षा द्वितीय तक के विद्यार्थियों के लिए चित्रकला एवं कविता पाठ गतिविधियाँ और कक्षा द्वितीय एवं तृतीय के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत मनमोहक हरियाणवी नृत्य, जो कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा तथा कक्षा तृतीय से पंचम तक के लिए 'हरियाणा दर्शन' प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में हरियाणा एवेंजर्स, हरियाणा चैलेंजर्स, हरियाणा वॉरियर्स और हरियाणा नाइट्स टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसमें हरियाणा वॉरियर्स ने प्रथम और हरियाणा नाइट्स ने द्वितीय तथा हरियाणा एवेंजर्स ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

भाषण प्रतियोगिता में कक्षा तृतीय से आर्यन और नितेश कक्षा चतुर्थ से मन्नत एवं सात्त्विक तथा कक्षा पंचम से आंचल एवं मान्या ने हरियाणा की गौरवशाली संस्कृति एवं वीरता पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संदीप वर्मा, एक्सईन आरजीटीपीपी खेदड़ ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए हरियाणा की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और गौरवशाली विरासत से जुड़े रहने का आह्वान किया। उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को निखारने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय की प्रधानाचार्या कोमल शर्मा ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गौरव की भावना को सुदृढ़ करते हैं। कार्यक्रम ने 'एकता में शक्ति है और अपनी संस्कृति में हमारी पहचान है का प्रेरणादायक संदेश दिया। मुख्य अतिथि एक्सईन संदीप वर्मा और प्रधानाचार्या कोमल शर्मा ने विजेता बच्चों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया। इस अवसर पर स्कूल स्टाफ के सदस्यगण और अभिभावकगण मौजूद रहे।

लाज शरम सब छोड़ी, एप्सटीन से नैना मिलाय के...!



(आलेख : बादल सरोज)



लोक लाज, मान मर्यादा, उत्तरदायित्व, सामाजिक शिष्टाचार, शुचिता, मानव मूल्य, निजी जीवन के नैतिक मानदंड वगैरा-वगैरा सभ्य समाज के हर पैमाने को, धड़ल्ले से जूते की नोक पर रखने का, जितना माद्दा 'व्यक्ति निर्माण ही देश निर्माण है' का दावा करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राजनीतिक मोर्चे के आनुषांगिक संगठन भारतीय जनता पार्टी में है, उतना दुनिया की किसी और पार्टी में नहीं है। इसका एक और नमूना, दुनिया भर को चौकाने वाला नमूना, उसने हाल ही में पेश कर दिखाया। इधर अमरीका में एप्सटीन फाइल नाम से मशहूर कुकर्मियों के कारनामे की नयी खेप जारी हुई, उधर भाजपा ने इसमें इस कलंकित दुराचारी के साथ दरबार करते दिखाई दे रहे हरदीप पुरी को मध्यप्रदेश से राज्यसभा में पहुंचाने के लिए अपना उम्मीदवार बनाने का एलान कर दिया। वह भी तब, जब इस कुख्यात कांड में अपनी लिप्तता को लेकर दी गयी उनकी सफाई साफ़-साफ़ झूठी साबित हो चुकी थी और इस तरह उन्होंने मंत्रिमंडल से बर्खास्त होने की योग्यता अर्जित कर ली थी। मोदी-शाह ने उन्हें मंत्रिमंडल में बनाए रखने के लिए मध्यप्रदेश का रास्ता निकाल लिया।

दुनिया भर में एप्सटीन फाइलों के संबोधन से कुख्यात फाइल्स उन अमरीकी सरकारी, कानूनी और जांच संबंधी दस्तावेजों का एक बड़ा संग्रह है, जो अमेरिकी फाइनेंसर और यौन अपराधी जेफरी एप्सटीन और उसके सहयोगियों से जुड़े मामलों में जुटाए गए थे। जेफरी एप्सटीन पर नाबालिग लड़कियों की यौन तस्करी और शोषण का नेटवर्क चलाने के आरोप थे। इस तरह के अनेक वीडियो और तस्वीरों के जखीरे बरामद हुए थे, जिनमें नाबालिग लड़कियों के साथ कुत्सित यौन संबंध बनाते हुए अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सहित पूर्व राष्ट्रपति और दुनिया की अनेक नामी हस्तियाँ नजर आई थीं। यौन सामर्थ्य बढाने के लिए बच्चियों और युवतियों की हत्या, यहाँ तक कि मानव अंगों के सेवन तक की बातें सामने आई थीं।

एपस्टीन ने उन व्यक्तियों की एक सूची ही तैयार नहीं की थी, जिन्हें वह नाबालिग लड़कियों को मुहैया कराता था, बल्कि जो उनके साथ किया जाता था, उसकी वीडियो और फोटोग्राफ्स भी इकट्ठा किया करता था। उनसे हुए मेल इत्यादि भी सुरक्षित रखता। इस सामग्री का उपयोग वह उन्हें ब्लैकमेल करने के लिए करता था। एक अन्य मामले में गिरफ्तार होने के बाद 2019 में जेल में ही उसकी मृत्यु हो गयी थी, जिसे आत्महत्या बताया गया, मगर सभी जानते हैं कि वह उसके "ग्राहकों" की सुरक्षा के लिए की गयी हत्या थी।

एप्सटीन की कारगुजारियां इतनी भयानक, घिनौनी और गलाजत भरी थीं कि पूरी दुनिया में क्षोभ और रोष की लहर उठ खड़ी हुई। जब-जब, जिन-जिन के नाम आये, तब-तब उन लोगों को अपनी-अपनी जगहों से इस्तीफे देने के लिए मजबूर होना पड़ा। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, नॉर्वे और स्लोवाकिया जैसे देशों में प्रमुख अधिकारियों और प्रमुख पदों पर बैठे लोगों ने दस्तावेजों में नाम आने के बाद इस्तीफे दिए हैं। स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री के एक राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने जेफरी एपस्टीन के साथ साझा किए गए संदेशों और बातचीत के खुलासे के बाद इस्तीफा दे दिया। नॉर्वे की पूर्व राजदूत मोना जूल ने भी एपस्टीन की वसीयत से जुड़े खुलासों के बाद अपना पद छोड़ दिया। वे इजरायल, ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र में नॉर्वे की राजदूत भी रह चुकी थी। ख़बरों के मुताबिक, दुनिया भर के 20 से अधिक देशों में असर देखा गया है, जहाँ 80 से अधिक प्रभावशाली लोग पहली खेप जारी होने के बाद जांच के घेरे में आ गए। बिल गेट्स को भी अपने फाउंडेशन बोर्ड से हटना पड़ा। डीपी वर्ल्ड के सीईओ सुल्तान अहमद बिन सुलायेम को भी इस्तीफा भी देना पड़ा।

अमरीकी जस्टिस डिपार्टमेंट के दस्तावेजों में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के चीफ और प्रेसिडेंट, बोर्गे ब्रेंडे और एपस्टीन के बीच सालों पहले हुई बातचीत सार्वजनिक हुई, जिसमें वर्ष 2008 में एक नाबालिग से दैहिक संबंध बनाने की जानकारी थी। ब्रेंडे ने गलती मानी और इस्तीफा दे दिया। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रेसिडेंट लॉरेंस एच. समर्स को एकेडमिक साल के आखिर में इस मशहूर यूनिवर्सिटी में अपने पद से हटने का एलान करना पड़ा। ये श्रीमान पूर्व प्रेसिडेंट बिल क्लिंटन के अंडर ट्रेजरी सेक्रेटरी और पूर्व प्रेसिडेंट बराक ओबामा के इकोनॉमिक एडवाइजर रहे थे। ब्रिटेन में प्रधानमंत्री कीर स्टारमर के चीफ ऑफ स्टाफ मॉर्गन मैकस्वीनी को इस्तीफा देना पड़ा। उनके बारे यह जानकारी सामने आई कि उन्होंने किसी ख़ास व्यक्ति को अमरीका में राजदूत बनवाने के लिए एप्सटीन से बात की थी। एफबीआई के डिप्टी डायरेक्टर डैन बोंजिनो ने भी विवाद के बीच पद छोड़ दिया। फ्रांस में पूर्व मंत्री जैक लैंग ने एक सांस्कृतिक संस्थान के प्रमुख पद से इस्तीफा दिया।

मोदी सरकार में केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी का नाम कुकर्मी जेफ्री एपस्टीन की फाइल्स और ईमेल डेटासेट में सामने आने के बाद उनके इस्तीफे की भी मांग उठी। जारी किए गए दस्तावेजों और तस्वीरों में हरदीप सिंह पुरी को जेफ्री एपस्टीन के साथ मैनहट्टन स्थित उसके टाउनहाउस में मुलाकातों के दौरान देखा गया है। रिकॉर्ड्स के अनुसार, दोनों के बीच 2014 से 2017 के दौरान करीब 62 ईमेल मिले। इसके अलावा अनेक और बैठकें भी हुई थीं, जिनके रिकॉर्ड सामने आये। हरदीप सिंह पुरी ने इन आरोपों का खंडन करते हुए दावा किया कि एपस्टीन के साथ उनकी मुलाकातें पूरी तरह से पेशेवर थीं। वे उससे अकेले में कभी नहीं मिले : जब भी मिले तब अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल के साथ मिले। उन्होंने एपस्टीन के किसी भी आपराधिक कृत्य से अपना कोई भी संबंध होने से साफ इनकार किया। मगर पिछले सप्ताह जब मार्को रुबियो अम्बानी से तेल सफाई का करार करने आये, ठीक तभी कुछ नयी तस्वीरें जारी हुईं, जो हरदीप पुरी के दावे का खंडन करती थी : जो ये बताती थीं कि हमेशा प्रतिनिधिमंडल के साथ मिलने और कभी अकेले न मिलने का पुरी का दावा झूठा था। वह एप्सटीन के साथ अकेले में वह भी उस कुख्यात कमरे में नजर आये, जिस कमरे के विडियोज बाकी लोगों की यौन क्रीड़ाओं के समय दिखे हैं। एप्सटीन कांड के जानकार बताते हैं कि तस्वीर में बिछी हुई चादर भी वही है, जो अन्य मामलों में देखी गयी है।

स्वाभाविक ही था कि इस झूठ के उजागर होने के बाद इस मंत्री को मंत्रिमंडल से बर्खास्त किया जाना एकमात्र स्वाभाविक अपेक्षा थी – मगर बजाय ऐसा करने के 'संस्कारी' संगठन के नियंत्रण में चलने वाली 'सदाचारी' पार्टी ने मंत्रिमंडल में उसकी निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए उसे मध्यप्रदेश से राज्यसभा में ले जाने का रास्ता चुना। हरदीप सिंह पुरी वर्तमान में उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सांसद है और उनका कार्यकाल इस साल 25 नवंबर को पूरा हो रहा है। उत्तर प्रदेश में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव को देखते हुए कथित रूप से नए चेहरों को मौका देने की योजना के तहत उन्हें वहां से दोबारा उम्मीदवार नहीं बनाया गया था, जिसके बाद अब पार्टी ने उन्हें मध्यप्रदेश से उच्च सदन भेजने का फैसला किया है। यहाँ एक सीट केन्द्रीय मंत्री एल मुरुगन से इस्तीफा लेकर खाली कराई गयी है, ताकि बंदे को भेजा जा सके।

इस अरक्षणीय का बचाव करने के लिए अनेक बहाने बनाए जा रहे हैं, कुतर्क उछाले जा रहे हैं। कुछ 'विद्वान' बताते हैं कि पंजाब में होने वाले विधान सभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा किया गया है। इस तरह वे यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे हरदीप पुरी पंजाब के अवाम का बड़ा चहेता हो – जो वह नहीं है। कुछ लोगों का मानना है कि एप्सटीन फाइल के हजारों पन्ने अभी और खुलने हैं – उनमे पुरी से बड़े वालों के नाम भी आ सकते हैं। बीच-बीच में मोदी की राजनीति खत्म करने की धमकी देकर अमरीकी राष्ट्रपति ट्रम्प इसका इशारा करता भी रहता है। ऐसे में यदि उस फाइल के नाम पर एक इस्तीफा हुआ, तो वह एक उदाहरण बन जाएगा। कुछ लोग मानते हैं कि तेल कूटनीति के लिए पुरी के जरिये भारत के मौजूदा हुक्मरानों को संदेश दिया गया है कि पिक्चर ही नहीं, हजारों पिक्चर्स अभी बाकी हैं।

वजहें जो रही हों – राजनीति का इतने नीचे चले जाना सचमुच में शर्म और लज्जा की बात है। मध्यप्रदेश के लिए तो और भी अधिक, क्योंकि उसे लोकसभा में 'साध्वी' मिलती हैं और राज्यसभा में हरदीप जैसे 'साधू' !!

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक - अर्थव्यवस्था विशेषांक

एसबीआई–सेबी रिपोर्ट ने बजट 2027 के लिए खोला नया आर्थिक द्वार – शेयर बाजार को मिलेगा टैक्स–मुक्ति का महाडोज?
उपशीर्षक : एलटीसीजी टैक्स खत्म करने की तैयारी, विदेशी निवेशकों की वापसी और बजट 2027 का बड़ा दांव

लेखक - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र।



प्रस्तावना - बजट 2027 पर टिकी दुनिया की निगाहें: वैश्विक युद्ध, कच्चे तेल की महंगाई और विदेशी निवेशकों की बिकवाली के दौर में भारतीय शेयर बाजार निर्णायक मोड़ पर है। 12 अक्टूबर की एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट, 2 नवंबर को सामने आया सेबी प्रस्ताव और वित्तमंत्री की घोषणा ने 1 फरवरी 2027 के बजट में एलटीसीजी सुधार की उम्मीदें बढ़ा दी हैं।

तथ्य: - तेल बाजार: 3 नवंबर 2026 को ब्रेंट क्रूड 104-107 डॉलर, WTI 96-98 डॉलर प्रति बैरल

- रुपया: डॉलर के मुकाबले 94.97 तक कमजोर

- एफपीआई बिकवाली: 2026 में शुद्ध बिकवाली लगभग 31 अरब डॉलर

- वर्तमान एलटीसीजी व्यवस्था: 12 महीने से अधिक होल्डिंग पर 1.25 लाख तक छूट, उससे अधिक पर 12.5% कर, अल्पकालिक पर 20%

मुख्य बिंदु - एसबीआई रिसर्च की 5 प्रमुख सिफारिशें (2 नवंबर 2026 रिपोर्ट):

1. छूट सीमा 1.25 लाख से बढ़ाकर 2 लाख करना - महंगाई से जोड़ने का सुझाव
2. अवधि आधारित कर: 1-2 वर्ष 12.5%, 2-3 वर्ष 5%, 3 वर्ष से अधिक पर 0% एलटीसीजी
3. म्यूचुअल फंड में पुनर्निवेश पर 90 दिन के भीतर कर स्थगन
4. एसटीटी में 50% वृद्धि - इक्विटी डिलीवरी 0.10% से 0.15%, फ्यूचर्स 0.05% से 0.075%, ऑप्शंस 0.15% से 0.225%, जिससे FY28 में 45,000 करोड़ अतिरिक्त राजस्व अनुमान
5. पूंजीगत लाभ कर की व्यापक समीक्षा - एलटीसीजी पूरी तरह समाप्त करने पर विचार

सेबी का प्रस्ताव (2 नवंबर):

विदेशी इक्विटी निवेशकों के लिए एलटीसीजी समाप्त करने की सिफारिश। घरेलू म्यूचुअल फंड निवेशकों को 1 वर्ष से अधिक होल्डिंग बेचकर दूसरी योजना में जाने पर छूट। ये गोपनीय, गैर-बाध्यकारी बजट-पूर्व प्रस्ताव हैं।

₹50,000 करोड़ का सवाल: एसबीआई अनुमान - एलटीसीजी पूरी तरह समाप्त करने से FY28 में 40,000-50,000 करोड़ राजस्व कमी, जीडीपी का 0.1-0.2%। FY25 में 1.3 लाख करोड़ का संग्रह असाधारण बाजार तेजी के कारण था। सरकार के सामने राजकोषीय घाटा, बुनियादी ढांचे पर खर्च और सामाजिक योजनाओं का संतुलन बड़ी चुनौती।

वित्त मंत्री का बयान: 2 नवंबर मुंबई में फाइनेंसियल एक्सप्रेस लीडरशिप अवार्ड्स में वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने निवेशकों की चिंता स्वीकार की, विचार करने का आश्वासन दिया, लेकिन कहा कर रियायत बाजार प्रदर्शन का एकमात्र आधार नहीं। 2023-24 में इसी कर ढांचे में अच्छा एफपीआई प्रवाह आया था, अब परिस्थितियां बदली हैं।

विश्लेषण - क्या बदलेगा बजट 2027? सरकार के सामने तीन रास्ते: विदेशी निवेशकों के लिए एलटीसीजी समाप्त, घरेलू-विदेशी के लिए अलग-अलग राहत, या अवधि आधारित क्रमिक कमी। टैक्स राहत से कर-पश्चात रिटर्न बढ़ेगा, प्रतिस्पर्धात्मकता सुधरेगी, लेकिन स्थायी मजबूती के लिए कंपनी आय वृद्धि, रुपये की स्थिरता, महंगाई नियंत्रण और मजबूत विकास जरूरी है। बजट 2027 अवसर है, पर प्रभाव घोषणा से ज्यादा संतुलित क्रियान्वयन पर निर्भर करेगा।

झारखंड के थाने में दुष्कर्म मामले में अब 15 पुलिस निलंबित, दो हुए गिरफ्तार

गीता कोड़ा पूर्णिमा साहू ने महिला आयोग से हस्तक्षेप की मांग की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



रांची। सरायकेला खरसावां जिले के गम्हरिया थाना परिसर में महिला फरियादी के साथ कथित दुष्कर्म के मामले ने राज्य पुलिस महकमे तक हड़कंप मचा रखा है। तेज विरोध , घेराव को देखते हुए एसपी मनोज स्वर्गियारी ने लगातार दूसरे दिन बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है ।रविवार को थाना प्रभारी समेत नौ पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया। इससे पहले शनिवार को छह पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया था। इस तरह अब तक कुल 15 पुलिसकर्मियों पर निलंबन की कार्रवाई हो चुकी है। वहीं, मामले में आरोपी दो एसआई मनोज कुमार साहू और हवलदार संतोष कुमार राय को गिरफ्तार कर लिया गया है।

जांच के लिए गठित विशेष जांच दल (एसआईटी) मामले के हर पहलू की पड़ताल कर रहा है। रविवार को एसपी मनोज स्वर्गियारी खुद पुलिस बल के साथ गम्हरिया थाना पहुंचते हैं । जहां उन्होंने घटनास्थल का मुआयना किया और थाना परिसर में मौजूद पुलिसकर्मियों से अलग-अलग बंद कमरों में पूछताछ कर बयान दर्ज की । एसपी ने स्पष्ट किया कि मामले की निष्पक्ष जांच होगी और घटना में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शामिल किसी भी पुलिसकर्मी को बख्शा नहीं जाएगा।

रविवार को निलंबित किए गए पुलिसकर्मियों में दो एसआई अजय पासवान और ललन रविदास, चार एएसआई विश्व उरांव, मुकेश कुजूर, मुकेश रविदास और सीताराम सिंह पाहन, दो हवलदार पितांबर महतो और बहादुर हांसदा तथा आरक्षी मनोज गोराई शामिल हैं। इससे पहले शनिवार को छह पुलिसकर्मियों को निलंबित किया गया था। इनमें थाना प्रभारी समेत अन्य पुलिसकर्मी शामिल थे। एसपी ने अनुशासनहीनता बरतने और घटना की जानकारी समय पर वरीय अधिकारियों को नहीं देने को भी गंभीरता से लिया है।

मामले में कार्रवाई के बाद रविवार को राजेश टुडू को गम्हरिया थाना का नया प्रभारी बनाया गया। उन्होंने थाना पहुंचकर कार्यभार संभाल लिया। वहीं, पुलिस अधीक्षक ने जिले के सभी थाना प्रभारियों को अपने मातहतों की गतिविधियों पर लगातार नजर रखने का निर्देश दिया है। चेतावनी दी गई है कि ड्यूटी के दौरान या थाना परिसर में कोई पुलिसकर्मी शराब अथवा अन्य नशे की हालत में मिला तो उसे सीधे सेवा से बर्खास्त करने की अनुशंसा की जाएगी।

एसपी ने निर्देश दिया है कि महिला शिकायतकर्ताओं की शिकायत प्राथमिकता के आधार पर दर्ज की जाए। उन्हें अनावश्यक रूप से थाने में बैठाकर नहीं रखा जाए। पूछताछ के दौरान महिला पुलिसकर्मी की उपस्थिति अनिवार्य होगी। किसी भी महिला फरियादी के साथ दुर्व्यवहार, दबाव बनाने या अभद्र टिप्पणी करने पर संबंधित पुलिसकर्मी के साथ थाना प्रभारी की जवाबदेही भी तय की जाएगी।

घटना को लेकर राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर भी विरोध तेज हो गया है। पूर्व सांसद गीता कोड़ा रविवार को भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ गम्हरिया थाना पहुंचीं। वहां सरायकेला के पूर्व विधायक अनंत राम टुडू , जिला अध्यक्ष हरे कृष्ण प्रधान उपस्थित थे। महिला नेत्रियों ने राज्य की कानून-व्यवस्था और महिला सुरक्षा पर सवाल उठाते हुए राष्ट्रीय महिला आयोग से हस्तक्षेप की मांग की है। उधर जे एल के एम ने भी प्रदर्शन किया था। आजसू ने भी एस पी को ज्ञापन दिया है कठोर कार्रवाई को लेकर ।

गम्हरिया थाना परिसर में हुई कथित घटना ने पुलिस की कार्यप्रणाली और महिला फरियादियों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। अब एसआईटी की जांच और आगे होने वाली कार्रवाई पर सबकी नजर है। पुलिस प्रशासन के सामने न केवल आरोपों की निष्पक्ष जांच कराने, बल्कि थानों में महिलाओं के प्रति संवेदनशील और जवाबदेह व्यवस्था सुनिश्चित करने की भी चुनौती है।

दीवाली से पहले दिल्ली में शराब की ऑनलाइन बुकिंग शुरू, DSIIDC ने लॉन्च किया 'Delhi Liquor Booking' एप

घर बैठे बुकिंग, QR कोड से कलेक्शन – होम डिलीवरी नहीं, 208 सरकारी ठेकों पर सुविधा शुरू

रिपोर्ट विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र



प्रस्तावना: त्योहारी सीजन में भीड़ को नियंत्रित करने और बिलिंग को पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से दिल्ली स्टेट इंडस्ट्रियल एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (DSIIDC) ने नया मोबाइल एप 'Delhi Liquor Booking' लॉन्च किया है।

तथ्य:

- लॉन्च: दीवाली से पहले DSIIDC द्वारा
- उपलब्धता: फिलहाल केवल DSIIDC के 208 सरकारी ठेकों पर
- कुल नेटवर्क: दिल्ली में 4 सरकारी निगमों के 700 से अधिक शराब के ठेके संचालित
- वर्तमान स्थिति: शुरुआती रुझान ठंडा, आगे का विस्तार ग्राहकों के रिस्पॉन्स पर निर्भर

कैसे काम करता है एप – मुख्य बिंदु:

1. एप पर जाकर ग्राहक पसंद के ब्रांड, बोतल का साइज और मात्रा का चुनाव कर सकते हैं
2. एप के जरिए ही डिजिटल पेमेंट करना होगा
3. भुगतान सफल होने पर फोन पर QR कोड जनरेट होगा
4. संबंधित दुकान पर जाकर QR कोड स्कैन कराने पर शराब प्राप्त होगी

जरूरी नियम और शर्तें:

- उपयोगकर्ता की उम्र कम से कम 25 वर्ष होना अनिवार्य
- एक व्यक्ति एक बार में अधिकतम 9 लीटर व्हिस्की और 18 लीटर बीयर खरीद सकता है
- ऑनलाइन बुकिंग के 48 घंटे के भीतर दुकान पर जाकर ऑर्डर कलेक्ट करना अनिवार्य
- दुकान से कलेक्ट करने के बाद वापसी का कोई प्रावधान नहीं, लेकिन कलेक्ट करने से पहले बुकिंग रद्द की जा सकती है

होम डिलीवरी पर स्थिति: सरकार ने स्पष्ट किया है कि इस सुविधा में होम डिलीवरी का कोई प्रावधान नहीं है। ग्राहक को स्वयं दुकान पर जाकर ऑर्डर लेना होगा। उद्देश्य केवल लंबी कतारों और भीड़ को कम करना तथा बिलिंग प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी बनाना है।

जनहित संदेश: आबकारी नियमों का पालन करें, 25 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को शराब बिक्री प्रतिबंधित है।

सेव लाइफ अस्पताल के संचालक डा0ओपी आनंद को गोली मारी गयी



सरायकेला -जमशेदपुर का मामला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, सरायकेला-खरसावां जिले के आरआईटी थाना क्षेत्र स्थित गायत्री शिक्षा निकेतन परिसर में सोमवार रात पारिवारिक संपत्ति विवाद ने खूनी रूप ले लिया।

गायत्री शिक्षा निकेतन के संचालक सत्यप्रकाश सुधांशु ने अपने छोटे भाई व 111 सेव लाइफ अस्पताल के संचालक डॉ. ओपी आनंद पर सर्विस रिवाल्वर से गोलियां चला दीं।

पीठ में गोली लगने से डॉ. आनंद लहूलुहान होकर गिर पड़े। स्वजन व चालक उन्हें तत्काल टाटा मुख्य अस्पताल (टीएमएच) लेकर पहुंचे, जहां उनका इलाज चल रहा है। घटना के बाद से आरोपित बड़ा भाई मोबाइल बंद कर भूमिगत हो गया है। डॉ. आनंद रात करीब आठ बजे जिम से अपने आवास पहुंचे थे। उन्होंने निजी सुरक्षाकर्मी को घर जाने के लिए कहा ही था कि स्कूल और आवास परिसर में बड़े भाई सत्यप्रकाश सुधांशु के साथ उनकी कहासुनी शुरू हो गई। दोनों भाइयों के बीच पिता की मृत्यु के बाद से स्कूल और पैतृक संपत्ति के बंटवारे को लेकर लंबे समय से विवाद चला आ रहा था। परिसर के भूतल पर डॉ. आनंद और ऊपरी तल पर सुधांशु का परिवार रहता है। इसको लेकर डॉ. ओपी आनंद की पत्नी के द्वारा बराबर सत्यप्रकाश सुधांशु के परिवार के साथ गाली गलौज किया जाता था। बीते आठ दिन पूर्व भी स्कूल परिसर में दोनों के बीच मारपीट हुई थी, जिसमें सुधांशु ने छोटे भाई की पिटाई की थी। कोविड काल के बाद से अस्पताल घाटे में चलने के कारण डॉ. आनंद तनाव में भी चल रहे थे।

गौकशी के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार, दो फरार; अवैध निर्माण पर चला बुलडोजर

नजफगढ़ के खैरा एक्सटेंशन में गौशाला की आड़ में गौकशी का आरोप, तीन गोवंश मृत मिले और तीन को बचाया गया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली



नई दिल्ली। नजफगढ़ के खैरा एक्सटेंशन क्षेत्र में गौशाला की आड़ में कथित गौकशी का मामला सामने आया है। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की सूचना एवं सक्रियता के बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए छह आरोपियों में से चार को गिरफ्तार किया है, जबकि दो आरोपी फरार बताए जा रहे हैं। मौके पर तीन गोवंश मृत मिले, जबकि तीन को बचा लिया गया। मामले से जुड़े अवैध निर्माण को मंगलवार को प्रशासन ने बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर दिया।

विहिप इंद्रप्रस्थ प्रांत के प्रांत मंत्री सुनील सूरी ने बताया कि सोमवार, 2 नवंबर को खैरा एक्सटेंशन, खैरा गांव और गोपाल नगर के निकट इस गतिविधि की सूचना मिलने पर संगठन के कार्यकर्ता मौके पर पहुंचे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि गौशाला की आड़ में गोवंश के साथ क्रूरता की जा रही थी। कार्यकर्ताओं की तत्परता से तीन गोवंश को बचाया गया, जबकि तीन की हत्या की जा चुकी थी।

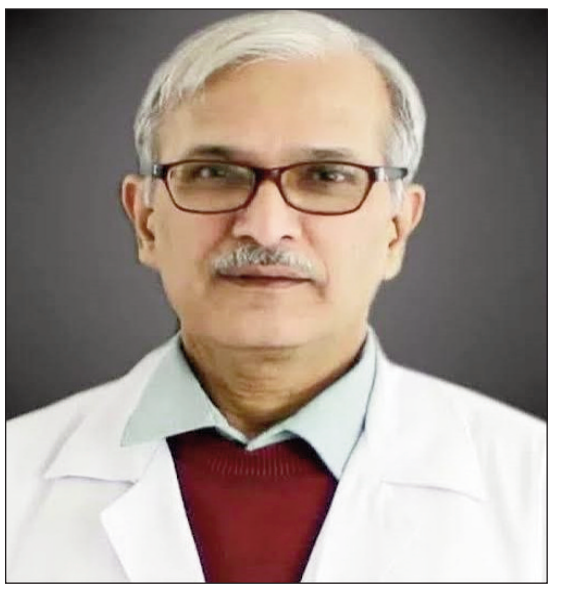
पुलिस ने इस संबंध में थाना जाफरपुर कलां, जिला द्वारका में एफआईआर संख्या 0114/2026 दर्ज की है। इसमें दिल्ली कृषि पशु संरक्षण अधिनियम, भारतीय न्याय संहिता, पशु क्रूरता निवारण अधिनियम और आर्म्स एक्ट की धाराओं के तहत कार्रवाई की गई है।

सूरी ने बताया कि उन्होंने विहिप इंद्रप्रस्थ के संगठन मंत्री सुबोध चंद्र के साथ शासन और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष मामला उठाया था। विधायक और जोन अध्यक्ष से भी सहयोग लेकर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की गई थी। इसके बाद मंगलवार को संबंधित अवैध निर्माण पर प्रशासन ने बुलडोजर कार्रवाई की।

सूरी ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की सरकार और प्रशासन का कार्रवाई के लिए आभार जताया। उन्होंने कहा कि फरार आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार किया जाना चाहिए और मामले की पूरी जांच कर सभी जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई होनी चाहिए। विहिप और बजरंग दल ने गोवंश की सुरक्षा के लिए आगे भी सक्रिय रहने की बात कही।

विश्वभर में एक अद्वितीय चिकित्सक के रूप में ख्याति अर्जित की थी डॉ. अशोक महापात्र ने : मनमोहन सामल

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वर : प्रख्यात न्यूरो सर्जन एवं पद्मश्री सम्मान से सम्मानित प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार महापात्र का 74 वर्ष की आयु में कल निधन हो गया। उन्होंने संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, लखनऊ तथा एम्स भुवनेश्वर के निदेशक के रूप में कार्य किया था। इसके अलावा, उन्होंने दिल्ली एम्स में डीन (रिसर्च) के पद से सेवानिवृत्ति ग्रहण की थी। वह भुवनेश्वर स्थित सोआ विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुके थे। देश में पीडियाट्रिक न्यूरो सर्जरी, न्यूरो ट्रॉमा तथा पेरिफेरल नर्व सर्जरी के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। चिकित्सा के क्षेत्र में उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए उन्हें प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया था। उनके निधन पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष तथा राज्यसभा सांसद श्री मनमोहन सामल ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

श्री सामल ने कहा कि डॉ. महापात्र ओडिशा के गौरव थे और सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत थे। उनके लिए कोई भी पद महत्वपूर्ण नहीं था, बल्कि उन्होंने जिस तरह लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाई और विश्वभर में एक अद्वितीय चिकित्सक के रूप में ख्याति अर्जित की, वह अतुलनीय है।

उन्होंने कहा कि अमेरिका जैसे कई बड़े देशों से उन्हें आकर्षक प्रस्ताव मिले थे, लेकिन उन सभी प्रस्तावों को ठुकराकर उन्होंने भारत में रहकर देशवासियों की सेवा करने का संकल्प लिया था। पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के सपनों के एम्स भुवनेश्वर की स्थापना में भी डॉ. महापात्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा था। श्री सामल ने कहा कि उनके निधन से आज ओडिशा ने एक युगद्रष्टा एवं महान व्यक्तित्व को खो दिया है।

स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज में 'दीपोवर्तिका' दीपावली मेले का भव्य आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली, 3 नवंबर 2026: स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के वीमेन डेवलपमेंट सेल द्वारा 3 नवंबर 2026 को महाविद्यालय परिसर में 'दीपोवर्तिका' (दीपावली मेले) का भव्य एवं उत्साहपूर्ण आयोजन किया गया। दीपावली के उल्लास, उमंग और रचनात्मकता से परिपूर्ण इस मेले का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. प्रवीण गर्ग द्वारा किया गया ।कार्यक्रम का सफल आयोजन संयोजिका प्रो. गौरी मिश्रा के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। इस आयोजन में प्रो.ऐश्वर्या झा के सहयोग तथा कॉमेनिया और सिंट्रिया के विद्यार्थियों की सक्रियसहभागिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यार्थियों के उत्साह, रचनात्मकता और समर्पण ने मेले को जीवंत, आकर्षक एवं यादगार बना दिया।



मेले में लगभग 50 विभिन्न स्टॉल लगाए गए, जिनमें हस्तनिर्मित वस्तुओं, आकर्षक सजावटी सामग्रियों, पारंपरिक एवं आधुनिक खान-पान के व्यंजनों तथा विविध उपयोगी उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। इन स्टॉलों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा, व्यावहारिक कौशल और उद्यमशीलता का प्रदर्शन करने के साथ-साथ आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने का अवसर मिला।

इस आयोजन की एक प्रमुख विशेषता पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता और प्रतिबद्धता रही। 'जीरो वेस्ट' (शून्य अपशिष्ट) की अवधारणा को केंद्र में रखते हुए स्वच्छ, हरित एवं पर्यावरण अनुकूल दीपावली मनाने का संदेश दिया गया। विद्यार्थियों को प्लास्टिक के उपयोग तथा अनावश्यक कचरे को कम करने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझने के लिए प्रेरित किया गया।

'दीपोवर्तिका' केवल दीपावली का उत्सव न रहकर रचनात्मकता, आत्मनिर्भरता, महिला सशक्तिकरण, उद्यमशीलता और पर्यावरण संरक्षण का एक सार्थक मंच बनकर उभरा। इस मेले ने भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं के उत्सव के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के प्रति विद्यार्थियों की संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त किया।

वीमेन डेवलपमेंट सेल की यह पहल विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता, उद्यमशीलता और सामाजिक चेतना विकसित करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास रही। इस प्रकार का आयोजन न केवल युवा पीढ़ी को अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को पहचानने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि आत्मनिर्भर एवं सशक्त भारत तथा 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

'दीपोवर्तिका' ने दीपों के पर्व को रचनात्मकता, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण के संदेश से आलोकित करते हुए एक यादगार आयोजन का स्वरूप प्रदान किया।

त्योहारी सीजन में अतिरिक्त यात्री भीड़ कम करने के लिए स्पेशल ट्रेनों के परिचालन की अवधि बढ़ाई गई, चार ट्रेनों में अतिरिक्त कोच भी जुड़ेंगे

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वर : त्योहारी सीजन के दौरान यात्रियों की बढ़ती मांग को देखते हुए रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

संबलपुर–सांतरागाछी के बीच चलने वाली स्पेशल ट्रेनों के परिचालन की अवधि बढ़ा दी गई है। इसके साथ ही नवंबर महीने की निर्धारित तिथियों पर भुवनेश्वर और नई दिल्ली के बीच चलने वाली चार तेजस राजधानी एक्सप्रेस ट्रेनों में एक अतिरिक्त एसी थ्री-टियर कोच लगाया जाएगा। संबलपुर और सांतरागाछी के बीच चलने वाली स्पेशल ट्रेनें दोनों दिशाओं में दो-दो अतिरिक्त फेरों के साथ संचालित होंगी। इन ट्रेनों का समय-सारणी इस प्रकार है :- 08303 संबलपुर–सांतरागाछी स्पेशल ट्रेन: 4 नवंबर से 18 नवंबर 2026 तक प्रत्येक बुधवार को चलेगी। - 08304 सांतरागाछी–संबलपुर स्पेशल ट्रेन: 5 नवंबर से 19 नवंबर 2026 तक प्रत्येक गुरुवार को चलेगी। अधिक संख्या में यात्रियों को यात्रा की सुविधा उपलब्ध कराने तथा अतिरिक्त भीड़ को कम करने के उद्देश्य से निम्नलिखित ट्रेनों में निर्धारित तिथियों पर अस्थायी रूप से एक अतिरिक्त एसी थ्री-टियर कोच जोड़ा जाएगा।

* 20817 भुवनेश्वर–नई दिल्ली तेजस राजधानी एक्सप्रेस: 7 नवंबर 2026।
* 20818 नई दिल्ली–भुवनेश्वर तेजस राजधानी एक्सप्रेस: 8 नवंबर 2026।
* 22823 भुवनेश्वर–नई दिल्ली तेजस राजधानी एक्सप्रेस: 10 नवंबर 2026।
* 22824 नई दिल्ली–भुवनेश्वर तेजस राजधानी एक्सप्रेस: 11 नवंबर 2026।

रेलवे द्वारा की गई इन व्यवस्थाओं से त्योहारों के दौरान यात्रियों को अतिरिक्त आरक्षित सीटें उपलब्ध होंगी तथा विशेष रूप से अधिक मांग वाले दिनों में यात्रा करना आसान होगा। इससे यात्रियों को बेहतर सुविधा मिलने के साथ-साथ ट्रेनों में अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने में भी मदद मिलेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023